

योगी गुरु जी के प्रश्नोत्तर — भाग 26

सत्संग से 192 प्रश्नोत्तर

आध्यात्मिक प्रत्यक्ष ज्ञान मार्ग

adhyatmikpratyakshgyan.com

प्रश्न: गुरु जी, मैं 9:00 बजे खाना खा लेता हूं। उसके बाद मैं साधना नहीं कर पाता, मुझे तुरंत नींद आ जाती है। क्या करूं — खाना खाऊं या नहीं? (P26-0001)

ठीक है। उसके पहले खा लो, या उसके पहले साधना कर लो, फिर भोजन करो।

प्रश्न: महाराज जी, भगवान का एक चित ध्यान का अभ्यास कैसे करें? कृपया मार्गदर्शन करें। (P26-0002)

देखो, आप अपने आप को ज्यादा से ज्यादा सत्कर्म में लगाओ। ठीक है? सत्कर्म ही आपका कल्याण करेगा — ईमानदारी और सत्संग के साथ।

प्रश्न: गुरु जी, मैं ईमानदारी से घर चलाती हूं, पर मुझे बदले में बेईमानी मिलती है। इससे मैं कैसे बाहर निकलूं? (P26-0003)

आप ईमानदारी से जियो। बस बात खत्म।

प्रश्न: जब हमें ठेस पहुंचती है, तो उस समय क्या करें? (P26-0004)

जब आपको ठेस पहुंचती है, तो मुझे यह देखना है कि जिसके द्वारा मुझे ठेस पहुंची, उस व्यक्ति का मेरे लिए भाव क्या था? वह क्या करना चाहता था? ठेस क्यों पहुंची? क्या मुझे सुधारना चाहता था? मुझे बदलना चाहता था? मुझे ठेस पर ध्यान नहीं देना है। ठेस तो लगेगी ही, क्योंकि आपकी धारणाएं हैं। आपकी धारणाएं जब टूटेंगी, तभी कुछ होगा। तो धारणाएं जब टूटेंगी, तो बहुत ठेस पहुंचने वाली है।

प्रश्न: क्या बिना गुरु के परमात्मा मिल सकते हैं? बताएं गुरु जी। (P26-0005)

नहीं। कैसे मिलेंगे? गुरु ज्ञान का प्रतीक है, और आप अज्ञान के भवसागर में पूरी तरह फंस गए हो। जब तक ज्ञान नहीं मिलेगा, मार्ग नहीं मिलेगा, तब तक आप आगे कैसे जा सकते हो? सीधी सी बात है।

प्रश्न: गुरुदेव, अभी भी हमारे संशय पूर्ण रूप से गिरे नहीं। कभी-कभी ऐसा होता है।

(P26-0006)

हां, जब तक आपकी उपलब्धि नहीं होगी — उपलब्धि हो जाएगी, संशय तभी मिटेगा, और जब तक उपलब्धि नहीं होगी, संशय बना रहेगा। लेकिन हमें अपने विवेक, अपनी समझदारी से समझना है। हमें भ्रमित नहीं होना है। ठीक है? हमें समझकर ज्ञान के द्वारा आगे बढ़ना है। मुझे किसी कामना में, किसी अनुभव में नहीं फंसना है। मुझे सिर्फ निकल जाना है।

प्रश्न: गुरुदेव, आपने बोला था "एक ही साथे सब सधे, सब साथे सब जाए" —

इसका क्या मतलब है? (P26-0007)

एक मतलब अपने को साधना है। एक ही साथे सब सधे — एक को सुधारना है, और वो भी कर्म के द्वारा। तो बस अपने को साध लिए, तो बात खत्म हो जाएगी।

प्रश्न: एक वीडियो में आपने कहा है कि परमात्मा को पाने के लिए गुरु की

आवश्यकता नहीं होती है — इसे समझाइए। (P26-0008)

आप उस वीडियो को फिर से देखिएगा और बात समझिएगा। गुरु ज्ञान का प्रतीक है। गुरु कोई व्यक्ति विशेष या शरीर नहीं है। लेकिन जिस शरीर के द्वारा मुझे ज्ञान मिल रहा है, उस शरीर को हमें प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि उस शरीर द्वारा ही खोजा है। तो गुरु के द्वारा अपने स्व तक पहुंचना है, आत्मज्ञान तक। और आत्मज्ञान के बाद ब्रह्म ज्ञान में किसी की जरूरत नहीं है। ठीक है? आपकी यात्रा ऐसे ही हो जाएगी।

प्रश्न: गुरु जी, कुछ नहीं चाहिए — क्या गुरु को अर्पण, सेवा के उद्देश्य से जाप कर

सकते हैं? (P26-0009)

जाप कर सकते हैं, लेकिन जाप के पहले पूरी तरह ईमानदार हो जाइए।

प्रश्न: आत्मचिंतन के दौरान विचारों के प्रति प्रतिक्रिया ना देने पर अंदर से खालीपन का एहसास होता है, डर भी लगता है और घबराहट भी होती है — तो क्या करें?

(P26-0010)

तो सिर्फ उसे देखें। ठीक है? प्रतिक्रिया ना दें। देखें।

प्रश्न: गुरु जी, अपने आप को साधने के लिए जो कर सकते हैं वह करें — चाहे अपनों को या सबको छोड़ दें? (P26-0011)

सिर्फ, देखो, बुराइयां छोड़नी हैं। हमें हमारे आचरण को बदलना है।

प्रश्न: गुरुदेव, आपने कहा था कि जो चले गए, उनके साथ हमने क्या किया — अब हमें हमारी गलतियां नजर आती हैं। तो क्या करें? (P26-0012)

ठीक है, अगर वह मिल जाएं तो उनसे क्षमा मांगो। अगर इस दुनिया में नहीं मिल पा रहे हैं, तो आंतरिक रूप से क्षमा मांग लीजिए, और किसी के साथ ऐसा ना करना।

प्रश्न: गुरु जी, एक बार फिर से स्वभाव, कुभाव, अभाव को समझा दीजिए। (P26-0013)

स्वभाव मतलब आप समझ के निकले हो कि मुझे अपना आत्मिक कल्याण करना है, सूझबूझ के साथ — तो ऐसे साधक वापस कभी नहीं जाते, सिर्फ अपना आत्मिक कल्याण करते हैं। कुभाव मतलब आप जहां पर हो, वहां झगड़ा हुआ, झंझट हुआ, आपके विरोध में हुआ, विपरीत हुआ, दुख हुआ — फिर आप निकल रहे हो। और अभाव का मतलब कोई कमी के कारण निकल रहे हो — कोई वैभव की कमी है, ऐसी कोई बात है। फिर ऐसे साधक ज्यादातर भटकते रहते हैं।

प्रश्न: सच्चे और ढोंगी गुरु की पहचान कैसे करें? (P26-0014)

सबसे पहले आप देखिए — क्या आप ईमानदार हैं? आप जीवन में पूरी तरह ईमानदार हैं, सत्कर्मी हैं? क्या सच में ज्ञान की खोज में निकले हैं? तभी आप सच्चे गुरु की पहचान कर पाएंगे। और सच्चे गुरु की यही पहचान है कि आप उसके पास जब तक रहेंगे, घुमा-फिरा के वह आपके कल्याण की ही बात करेगा। आपके कल्याण के लिए वह हर वक्त काम करेगा। यही असली गुरु की पहचान है।

प्रश्न: गुरु जी, जीवन का उद्देश्य कैसे फिक्स करें? (P26-0015)

लक्ष्य को समझें कि जीवन में मुझे क्या चाहिए? मैं कहां जाना चाहता हूं? और जब परिणाम आएगा, तो उस परिणाम का क्या होगा?

प्रश्न: योगी जी, जब तक आपका सत्संग चल रहा है तब तक आनंद की वर्षा हो रही है, सत्संग खत्म होते ही आनंद खत्म हो जाता है — क्या करें? (P26-0016)

तो शब्दों में जीने का प्रयास करिए।

प्रश्न: गुरुदेव, मैं अपनी सामर्थ्य से इस मार्ग पर हूं, परंतु फिर भी यदि मैं निकल लिया (शरीर छूट गया) और आत्मज्ञान नहीं हुआ, तो क्या होगा? (P26-0017)

हां, जैसे आप सफर पर निकल गए, तो रात को जहां आपने विश्राम किया, सुबह वहीं से यात्रा की शुरुआत होगी। जब भी आप चलोगे, तो यात्रा की शुरुआत वहीं से होगी। तो अब देखना है कि जैसी मति वैसी गति। अगर आखिरी में आप वापस जाते हुए शरीर छूटा है — ऐसा तो नहीं कि लक्ष्य से आप भाग गए, तब शरीर छूटा है — तब तो बहुत दुविधा में आपका जन्म होगा। और अगर आपने लक्ष्य की तरफ ही मुंह करके शरीर को छोड़ा है, लक्ष्य को पाने में ही शरीर छोड़ा है, तो आपका जन्म होगा और जब आप समझने लायक होंगे, तो वहीं से यात्रा की शुरुआत हो जाएगी।

प्रश्न: गुरु जी के प्रति पूर्ण शरणागति कैसे लें? सेवा भाव कैसे जागे? सेवा कब मिलेगी? (P26-0018)

सेवा करोगे तो सेवा मिलेगी। देखिए, जैसे आप सत्कर्म का भाव रखते हो, पहले कुछ-कुछ मिलता है आपके जीवन में, और जैसे ही गुरु के सानिध्य में जाते हो, आपको 24 घंटे मिलने लगता है। तो सत्कर्म ही करो, क्योंकि जितनी तेजी से आप सत्कर्म करोगे, उतनी तेजी से यात्रा होगी।

प्रश्न: गुरु जी, हर समय डर लगा रहता है। क्या करूं? (P26-0019)

डर तभी है जब कोई कामना है, कोई इच्छा है और आप कहीं ना कहीं से कमजोर हो, उसे पूरा नहीं कर पा रहे हो। या तो जिसके द्वारा पूरा कर रहे हो, वह इधर-उधर कर रहा है, तो डर बना रहेगा। डर को हटाने के लिए सामर्थ्यवान बनाएं अपने आप को।

प्रश्न: गुरुदेव, प्रश्न यह खड़ा हो जाता है कि जहां यात्रा खत्म होती है वहीं से शुरू होगी। तो इस भाव में पूर्ण विश्वास कैसे जागे? आप कैसे सिद्ध कर सकते हैं कि हमारी यात्रा वहीं शुरू होगी? (P26-0020)

देखो, कुछ बातें हैं महसूस करने की, समझने की। इसमें सिद्ध कैसे करेंगे? अगर आप समझ गए तो ठीक है, नहीं सिद्ध हो रहा है तो छोड़ दो। मुझे जहां तक आपको बताना था मैंने बता दिया। यह समझ का मार्ग है। कोई कहे कि मुझे भूख है, तो कैसे सिद्ध करेगा कि भूख है या नहीं? क्योंकि जिसको भूख नहीं है वह भी भोजन को ग्रहण कर सकता है। तो हर बात सिद्ध नहीं की जाती। कुछ बातें हमें अपने विवेक से, अपनी समझ से, अपने बुद्धि लेवल से समझनी होती हैं और उस पर मुझे यात्रा करनी पड़ेगी।

प्रश्न: विकारों से दूर रहने के लिए क्या किसी का सहारा ले सकते हैं? तो किसका लें? (P26-0021)

गुरु। गुरु का सहारा ही काम आएगा। निर्विकार होने के लिए सिर्फ एक ही सहारा काम आ सकता है — गुरु। और कोई सहारा काम आने वाला नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, अगर सामने वाला हमेशा लड़ने को उतारू रहता है तो क्या हम भी लड़ें? (P26-0022)

नहीं। आप अपने आप को कुछ ऐसा सामर्थ्यवान बनाओ कि बिना लड़े आप उससे जीत जाओ और वह हार जाए। आप अपना काम करो। और अगर आपको लग रहा है कि वह लड़ाकू ही है, बात नहीं सुन रहा है, तो उसका त्याग कर दो।

प्रश्न: गुरु जी, पुरानी गलती की यादें परेशान कर रही हैं। इनसे कैसे छुटकारा पाएं? (P26-0023)

पुरानी गलती अगर आपको तकलीफ दे रही है तो अब आगे ऐसी गलती ना करो, पश्चाताप करो। और जिसके साथ गलती हुई है, अगर वह मौजूद है तो उससे जाकर क्षमा मांग लो। अगर मौजूद नहीं है तो ऐसे ही पश्चाताप करो।

प्रश्न: क्या आत्मज्ञान मिलने पर हम हमेशा खुश रहते हैं? (P26-0024)

हां, एकदम आनंद ही रहता है और कुछ भी नहीं। और अगर आंखों में आंसू आते हैं, दुख होता है, तो वह किसी और के लिए, ना कि व्यक्तिगत स्वयं के लिए।

प्रश्न: अगर गुरु मात्र सहारा है, तो यदि शिष्य गुरु की बातों को बिना तर्क के स्वीकार करता है, तो क्या वह अहंकार का नाश कर रहा है या केवल अपने विवेक को गुरु के हवाले कर रहा है? (P26-0025)

तर्क ठीक है, कुतर्क नहीं। अगर आपके प्रश्न के उत्तर प्रत्यक्ष मिल गए तो तर्क की जरूरत ही नहीं। गुरु के सामने आप तर्क कर ही नहीं सकते।

प्रश्न: गुरु जी, जातिवाद और जाति के नाम पर अत्याचार, भेदभाव को कैसे खत्म करें? (P26-0026)

कोई बात नहीं, आप मत करो। आप में नहीं होना चाहिए। अगर आप ऐसा जियोगे, भेदभाव नहीं रखोगे, तो धीरे-धीरे उसका असर पड़ेगा। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र — जितने भी जीव हैं, सबके अंदर हैं। जब कोई मां अपने बच्चे को जन्म देती है और उसके मल को साफ करती है, उस समय वह शूद्र होती है। फिर उसके भोजन की व्यवस्था करती है, उस समय वह वैश्य होती है। फिर उसकी रक्षा करती है, उस समय क्षत्रिय होती है। और आखिरी में ज्ञान देकर उसे समाज में छोड़ देती है, उस समय वह ब्राह्मण होती है। तो चार वर्ण प्रकृति के हर जीव में हैं। जिसने चारों वर्ण पूर्णतः, बिना भेदभाव के अपना लिए, वह महात्मा हो जाएगा, महान आत्मा हो जाएगा।

प्रश्न: गरीब इंसान महिला है, क्या वह सामर्थ्यवान नहीं बन सकती? (P26-0027)

महिला देश चला रही हैं। आप महिला का वह भाव कब उतारोगे? महिला आकाश में उड़ रही हैं, महिला शिक्षक हैं। ऐसी-ऐसी महिलाएं हैं जिनके अंदर में पुरुष काम कर रहे हैं, वह अधिकारी होकर घूम रही हैं। आप उनको देखिए ना। महिला का चोला ओढ़कर आप अपने आप को क्यों कमजोर कर रहे हो? बस, सामर्थ्यवान बनने के लिए आपको मेहनत करनी पड़ेगी।

प्रश्न: गुरु जी, जब साधक सत्संग में बैठते हैं तो अपने शरीर पर कैसे नियंत्रण रखें? सत्संग चलते समय शरीर में हलचल होती है — कहीं पैर दुखता है, कहीं खुजलाहट होती है — जिससे बाजू वाले भी डिस्टर्ब होते हैं। (P26-0028)

जब ऐसा हो तो आप देखिए उस समय जरूरत है या नहीं। जरूरत है तो करिए, नहीं जरूरत है तो छोड़ दीजिए। और जब आप कुछ करने जा रहे हो, कहीं जा रहे हो, तो एक बार पूरी तरह फ्रेश हो लो, अपने आप को उस लायक तैयार कर लो। ऐसा इसलिए होता है कि आप लापरवाह हो, और कुछ भी नहीं। अगर आप अपने पे अनुशासन करो तो आप बिगड़ोगे ही नहीं, अपने आप को सुधार लोगे। या तो खुद अनुशासन करिए, या किसी ऐसे समझदार व्यक्ति के पास रहिए जो आप पर अनुशासन कर पाए। लेकिन ऐसे व्यक्ति के पास मत रहना जो अनुशासन के बहाने आपका शोषण कर ले।

प्रश्न: माला फेरते समय मन को वश में कैसे करें? (P26-0029)

जब मन को वश में कर लोगे तो माला किसमें फेरोगे? माला तो रुक जाएगी। मन की वजह से तो माला फिर रही है। मन तो निमित्त है माला फेरने का। ईमानदारी, सत्कर्म अपना लो और आगे बढ़ो।

प्रश्न: सद्गुरु, जब तक आत्मा परमात्मा की तरफ नहीं चलती तब तक द्वैत है। तो द्वैत में एक में और एक आत्मा — यह है या कुछ और? कृपया बताएं। (P26-0030)

आत्मा ही जीवात्मा है, कोई अलग नहीं है। इच्छा-अपेक्षा में जीवात्मा बन गया।

प्रश्न: गुरु जी, भावातीत को कैसे समझा जाए? (P26-0031)

समझना है या अनुभव करना है? देखिए, कर्म करने में आपका क्या भाव होता है। कर्म के पहले और कर्म के बाद एक भाव बनता है, उससे फल का निर्णय होता है। इसलिए अपने आप को शुद्ध करिए ईमानदारी और सत्कर्म के द्वारा।

प्रश्न: गुरु जी, स्वयं को कैसे जानें? (P26-0032)

स्वयं को तो जानते हो। उस स्थिति में रखना है या नहीं रखना है, देख लो। कौन व्यक्ति स्वयं को नहीं जानता? सबको सब पता है। क्या जानना बाकी है? स्वयं को इस स्थिति में रखना है तो ठीक है, नहीं तो निकाल लो। बस बात खत्म।

प्रश्न: कब तक ज्ञान प्राप्त हो जाएगा गुरु जी? (P26-0033)

आपके ऊपर है। जितना प्राप्त किया उतना छोड़ दो। ज्ञान प्राप्त नहीं होता, ज्ञान के द्वारा अज्ञान को छोड़ा जाता है। फिर ज्ञान भी छूट जाता है, आप बचते हो। और आपके अंदर खुद ज्ञान है, वह ज्ञान प्रकट होता है।

प्रश्न: गुरु जी, जन्म-मरण के फंदे से कैसे बाहर निकलें? (P26-0034)

उम्मीद छोड़ दो।

प्रश्न: गुरु जी, मुझे खुशी हुई कि आपको परमात्मा प्राप्ति हुई। क्या आपने इसके लिए जी-जान लगा दिया था? (P26-0035)

नहीं। मैं आपको इस बात को क्लियर कर दूँ कि मुझे अभी परमात्मा प्राप्ति नहीं है। मैं आत्मज्ञान की स्थिति में हूँ, और आत्मज्ञान के बाद 2020 से मेरी यात्रा उस परमात्मा के लिए चल रही है, और मैं उसके बहुत करीब हूँ — इतना मैं महसूस कर पाता हूँ। जब मुझे ज्ञान होने वाला था तब भी मैं महसूस कर रहा था कि मैं ज्ञान के बहुत करीब हूँ, और अब मैं महसूस कर पाता हूँ कि मैं उस परमात्मा के बहुत करीब हूँ। तो मुझे आत्मज्ञान हुआ है और मेरी यात्रा ब्रह्म ज्ञान की चल रही है, और वह कभी भी हो सकती है, किसी क्षण भी हो सकती है।

प्रश्न: गुरु जी, अंतःकरण शुद्ध कैसे करें और शुद्ध होने का क्या प्रमाण है?

(P26-0036)

शुद्ध होने का प्रमाण सिर्फ आप हो, और कोई नहीं — और आपका कर्म।

प्रश्न: गुरु जी, ओशो, कबीर जी, रामकृष्ण परमहंस, जे. कृष्णमूर्ति, रमण महर्षि, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों के बारे में आप क्या कहेंगे? (P26-0037)

जितने लोग भी समाज के लिए काम किए हैं, चाहे वो कोई भी हो — चाहे ओसो हो, चाहे कबीर जी हो, चाहे रामकृष्ण परमहंस हो, जे. कृष्णमूर्ति हो, रमण महर्षि हो, स्वामी विवेकानंद हो — सबको मैं तहे दिल से प्रणाम करता हूं। जब मैं व्यक्तिगत उनसे नहीं मिला हूं तो मैं उनके बारे में क्या बोल सकता हूं? जितना आपको उनके बारे में पता है, उतना मुझे पता है। लेकिन मैंने उनका कर्म देखा। 2020 के पहले मुझसे जहां तक हो सकता था — किताबों से लेकर वीडियो सुनना — मैंने किया। 2020 के बाद जब मुझे हुआ तो मुझे फिर उसकी जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन उसके पहले आधार तो इतिहास ही है ना। आज अगर हम चल रहे हैं तो इतिहास को लेकर ही तो आगे बढ़ रहे हैं। अगर महापुरुषों ने काम किया है तो उसी इतिहास को लेकर मैं आगे बढ़ रहा हूं। एक विद्यार्थी को शिक्षक पढ़ा रहा है, तभी तो वह पढ़कर किसी और को पढ़ा रहा है; अगर पढ़ाने वाला उसको नहीं मिलता तो वह किसी चौराहे पर अनपढ़ की तरह बैठा रहता। तो आज अगर मैं इस स्थिति में हूं, आपको ज्ञान दे पा रहा हूं, तो इतिहास ही मेरा सहायक है। इसलिए इतिहास को मैं प्रणाम करता हूं।

प्रश्न: गुरुदेव, ब्रह्म ज्ञान के बाद आप हमें भूल तो नहीं जाएंगे? हम भी आपके पीछे-पीछे हैं। (P26-0038)

भूल कैसे जाएंगे? कुछ भी भूलता नहीं। आत्मज्ञान के बाद भी व्यक्ति कुछ भूलता नहीं है। भूलना कुछ नहीं होता है, वह मुक्त हो जाता है।

प्रश्न: गुरुदेव, आत्मज्ञान और ब्रह्म ज्ञान (परम ज्ञान) अलग हैं? इनका अंतर स्पष्ट करें। (P26-0039)

हां। आत्मज्ञान मतलब आपका खुद का ज्ञान — आत्मदर्शन, आत्मज्ञान, आत्म-साक्षात्कार — और उसके बाद ब्रह्म की यात्रा। खुद का ज्ञान, उसके बाद जहां से आप आए हो उससे मिलना — यह ब्रह्म ज्ञान है।

प्रश्न: गुरु जी, इस संसार में जन्म लेकर संसार से विरक्त रहना सही है? (P26-0040)

हां। विरक्त का मतलब होता है कि राग-द्वेष वाला काम मत करो। समाज के लिए कुछ काम करो।

प्रश्न: गुरु जी, आपके हिसाब से आत्मज्ञान क्या है? (P26-0041)

सारे दुखों से मुक्ति, अपने आप में स्थिर हो जाना। राग, द्वेष, मोह, इच्छा, अपेक्षा, मेरा और कर्ता के भाव से मुक्त होकर अपने परम सत्य में स्थिर हो जाना — यह आत्मज्ञान है।

प्रश्न: गुरु जी, एक लड़का है जो माता-पिता की बात नहीं समझता, उसके लिए क्या करें? (P26-0042)

अब उसके लिए कहना क्या — हो सकता है माता-पिता वह कह रहे हैं जिसकी सामर्थ्य उसमें नहीं है, या माता-पिता जो कह रहे हैं वह उसको समझ में नहीं आ रहा है। तो उसको बैठाकर बात करना पड़ेगा। बात करिए।

प्रश्न: गुरु जी, मैं सेवा करना चाहता हूं लेकिन बार-बार यह संशय आता है कि मैं जिनकी सेवा कर रहा हूं वो मेरे जैसा जीव या माया है या वह परम सत्य है? मैं जिनकी सेवा कर रहा हूं वह कौन है? (P26-0043)

अब यह तो आपको देखना है। आप जरूरतमंद की सेवा करो, बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, सत्कर्म और परमार्थ क्या है? (P26-0044)

सत्कर्म — जरूरतमंद की सेवा। और परमार्थ मतलब उसका परिणाम आएगा; परमार्थ में आप आगे बढ़ जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा एक है या अनेक? (P26-0045)

एक जैसा है, लेकिन है अनेक।

प्रश्न: गुरु जी, मोक्ष के तीन सोपान — विदेह (जैसे राजा जनक), प्रकृति-लय और ब्रह्म-लय — इनमें श्रेष्ठ कौन सा है? ब्रह्म में लय होने के बाद क्या जीव का अस्तित्व रहता है? (P26-0046)

एक बात बताएं — आपने एक बूंद समुद्र में मिला दी, तो क्या एक बूंद का अस्तित्व मिट जाएगा? उसकी तुलना नहीं कर पाओगे, लेकिन मिलने के बाद भी तो उसका अस्तित्व है कि नहीं है?

प्रश्न: गुरु जी, क्या मोक्ष के बाद जीव वापस जन्म-मरण में आएगा? कभी तो हम उसके पास थे, तभी तो आए। (P26-0047)

वो आपके ऊपर है — आना, न आना। कोई भी व्यक्ति जन्मा, उसने अपराध किया, जेल गया, वह बाहर आया — तो क्या फिर वह अपराध करके जेल नहीं जा सकता? अगर नहीं आ सकता तो इसका मतलब पहली बार भी नहीं आता। तो आपके ऊपर है कि बाहर आने के बाद आपको जेल अच्छा लगा कि बाहर। आज अगर हम पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं तो इसका मतलब कभी ना कभी तो हम पूर्णता में थे — थे, तभी प्राप्त करना चाहते हैं। तो फिर हम छोड़ भी सकते हैं। यह आपके ऊपर है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या किताबें पढ़कर, सत्संग वीडियो सुनकर अपने तर्क से पहुंचा जा सकता है? (P26-0048)

किताबें, सत्संग — अब आप किसके द्वारा सुन रहे हो, वह है कौन? इसीलिए कहा गया — जीवंत गुरु ढूंढो, जीवंत गुरु की शरण में जाओ।

प्रश्न: गुरुदेव, तबीयत खराब होने के कारण पांच-छह हजार की सैलरी रहेगी। तो उसमें से पिता श्री का सहयोग करें, अथवा आधा आश्रम में भी दें? (P26-0049)

आप पहले अपनी जरूरत, अपना दायित्व, अपनी जिम्मेदारी निभाइए। उसे निभाते हुए अगर उसमें से कुछ बचता है, तब उस दान का, उस सेवा का महत्व है; नहीं तो नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, पैसे उतने नहीं हैं — तो आश्रम में खाकर रहने से कर्ज तो नहीं चढ़ेगा? इसलिए मैं चाहता हूं कि हर एक काम मुझे ही दें, दिन भर काम करवाएं, रात को आत्मचिंतन करूंगा। (P26-0050)

देखो एक बात बताएं — गुरु और मां-बाप के यहां खाने में कोई कर्ज नहीं होता है। और जिस लिए हमने अपनों की कुटिया का निर्माण किया है, अगर आप वह कार्य कर दें तो कोई कर्ज ही नहीं है। आप साधना करके उस परम स्थिति को उपलब्ध हो जाएं, तो कर्ज थोड़ी ना। हम तो इसी के लिए मेहनत कर रहे हैं कि आप आएँ और आप उपलब्ध हो जाएँ।

प्रश्न: गुरु जी, अपने आप में सतत कैसे बना रहूँ? जरूरत के कार्य में मैं कभी-कभी लिप्त हो जाता हूँ, बेमतलब की बातें करने की बेईमानी हो जाती है। कृपया मार्गदर्शन करें। (P26-0051)

देखो, इसे आपको समझना है कि मुझे कुछ भी हो जाए, कोई भी स्थिति-परिस्थिति हो जाए, मुझे बेईमानी नहीं करनी है तो नहीं करनी है। इतना आपको संकल्प लेना पड़ेगा कि देश, काल, स्थिति, परिस्थिति में कुछ भी हो जाए — चाहे शब्दों की बेईमानी हो, चाहे कुछ भी हो — मुझे नहीं करनी है तो नहीं करनी है। इसका हमें विशेष ध्यान रखना है।

प्रश्न: गुरु जी, विरक्ति और वैराग्य से ही आत्मिक ज्ञान संभव है — तो प्रयास किस दिशा में करें? (P26-0052)

प्रयास उस दिशा में जो आपको चाहिए। देखो आपको क्या चाहिए, उस दिशा में प्रयास करना पड़ेगा। अब आपको यह देखना है कि मुझे जाना कहां है? मुझे जीवन में क्या चाहिए? मैं किसके लिए निकला हूँ? मेरे जन्म का उद्देश्य क्या है? मैं क्या चाहता हूँ? यह आपको तय करना पड़ेगा, और तय करने के बाद आपको पूरी तरह उस पर काम करना पड़ेगा। सब कुछ संभव होगा, और आपको उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। मेहनत ही आपको आगे ले जाएगी।

प्रश्न: गुरु जी, आपने कहा कि कम भोजन करोगे तो आत्मचिंतन ज्यादा होगा — मुझे समझ में नहीं आया। कृपया मार्गदर्शन करें। (P26-0053)

अगर आप कुछ चिंतन करना चाहते हो, तो अगर कम भोजन रहेगा तो चिंतन बहुत तेजी से होगा; आप उस कार्य में बहुत तेजी से लग जाओगे। अब देखना यह है कि आपका कार्य किस तरीके का है — शारीरिक मेहनत का है कि मानसिक। अगर शारीरिक मेहनत का है तब तो आपको ज्यादा भोजन लेना पड़ेगा, जरूरत के हिसाब से। और अगर आपका मानसिक चिंतन है, मानसिक कार्य है, तब आप कम भोजन लेंगे तो मानसिक चिंतन अच्छा कर सकते हैं, उस पर विचार-विमर्श अच्छा कर सकते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, मैं यह समझ चुका हूं कि मैं शरीर नहीं हूं, फिर भी आसक्ति इतनी मजबूत है कि जैसे ही हम आत्म-कल्याण के लिए आगे बढ़ते हैं, वापस आने की तीव्रता बढ़ जाती है। ऐसा क्यों? (P26-0054)

इसलिए कि आपको कुछ वहां से चाहिए। आप निकल तो जाते हो, लेकिन कुछ दिन बाद आपको वहां की यादें, वहां की व्यवस्था सताने लगती है, वहां की बातें — फिर आप वहीं निकल जाते हो।

प्रश्न: गुरु जी, क्या ईमानदारी और सत्कर्म ही जीवन है? (P26-0055)

जीवन तो उसका भी है जो बेईमानी में लिप्त है, वह भी उसका जीवन है। लेकिन आप अगर आत्मिक कल्याण करना चाहते हो, इस दुख के भवसागर से निकलना चाहते हो, तो ईमानदारी-सत्कर्म ही आपको निकाल सकता है।

प्रश्न: गुरु जी, अगर मैं कम भोजन लूंगा तो मेरा मन तो भोजन में लगा रहेगा, तो चिंतन भोजन का होगा। कृपया मार्गदर्शन करें। (P26-0056)

देखो, मान लीजिए एक व्यक्ति सुबह का खाकर निकला, शाम को उसे बहुत भूख लगी है, लेकिन उसका लड़का — या जिसके प्रति उसका प्रेम था — बीमार हो गया, एडमिट हो गया। क्या आपको लगता है कि वह शाम का भोजन करेगा? उसकी भूख गई, वह उसे ठीक करने में लग जाएगा। तो अगर आपका मन भोजन में लग गया, तो इसका मतलब आपके पास वह काम बहुत जरूरी नहीं है। क्योंकि अगर सबसे जरूरी काम होगा तो भूख वगैरह सब अपने आप कम हो जाती है, आप ज्यादा भोजन कर ही नहीं सकते। तो बात यह है कि कौन सा कार्य आपके लिए कितना जरूरी है। यह जब आप समझ पाएंगे, तभी आप कर पाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, आपने पहले बोला था कि (साधना के लिए निकलने से पहले) घर से परमिशन चाहिए होती है — उसका क्या मतलब है? (P26-0057)

परमिशन का मतलब यह होता है कि हम बताकर आएँ कि भैया, हम जा रहे हैं अपने आत्मिक कल्याण के लिए। वो परमिशन दें या ना दें। अगर मेरा कर्तव्य पूरा हो गया, मेरी जिम्मेदारी पूरी हो गई और मुझे आत्मिक कल्याण करना है, तो मैं सामने वाले को बोल दूँ — बोलना ही बताना है। ऐसा नहीं कि वह परमिशन दे तब निकलेंगे, नहीं दे तो वहीं रुके रहेंगे। मेरी जिंदगी है, मेरा जीवन है; मेरी जिम्मेदारी, मेरा कर्तव्य अगर पूरा हो गया है तो मैं बोलकर निकलूँ, जाने से पहले बोल दूँ। बातचीत कर लेना बहुत जरूरी होता है — जिसके साथ हम रहते हैं, उसको बताना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि मेरी वजह से कोई परेशान हो, इसका कोई मतलब नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, चिंतन के लिए कुछ भरोसा नहीं, तो क्या सीधा आत्म-स्थिति में टिक जाएं? आत्म-चिंतन कैसे करें? (P26-0058)

इस पर तो कल बात हो चुकी है। एक प्रश्न को एक बार में क्लियर करो, उसको फिर दोबारा रिपीट मत करो। कल तुझे बताया ना — जब तुझे लग रहा है कि सब कुछ मेरा छूट गया है, तो बस यह आत्मचिंतन कर कि मेरी स्थिति में मैं क्यों स्थिर नहीं हो पा रहा हूँ। वो कमी तू देख और उस कमी को हटा। यही आत्मिक चिंतन है। अगर सब हो ही गया है तो कहीं ना कहीं तो कोई कमी बची है, जो मैं देख नहीं पा रहा हूँ; कमी नहीं बची होती तो मेरी स्थिति होती। तो उसे सूक्ष्म तरीके से देख। यही आत्मिक चिंतन है। एक प्रश्न को हमें एक ही बार में क्लियर कर लेना चाहिए — क्योंकि अगर आप उस समय पूरा नहीं करते, तो हो सकता है आपका शरीर छूट जाए या जवाब देने वाला चला जाए, फिर आपका संशय मिटेगा नहीं, और आप वही प्रश्न लेकर फिर पैदा होंगे। जब तक यह प्रश्न है, तब तक आप अपनी स्थिति में, स्व में स्थिर नहीं हो पाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, (नियम को) आदत में कैसे लाएं, हैबिट बनाकर कैसे रखें? (P26-0059)

उसमें जियो। यहां आए हो तो इस नियम में जियो — जैसा यहां का नियम है, उस नियम में जी, बस। इसमें हैबिट में क्या लाना है? जब जिएंगे तो हैबिट में आ जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, जब परिवार में सबकी गलती हो और मजबूत व्यक्ति कमजोर को डांटे, तो क्या करें? (P26-0060)

उसी तरीके से जवाब दें। क्या आपने डांट वाला काम किया है? अगर डांट वाला काम किया नहीं है, तो आप उसे कहिए कि ऐसा तो कोई कार्य मेरे द्वारा नहीं हुआ कि आप मुझे डांटो। क्योंकि बिना मतलब का अगर आप डांट सुनते हो, तो आप धीरे-धीरे कमजोर हो जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, यदि हम किसी को उसके फल के लिए छोड़ दे रहे हैं और उसके कारण उसको परेशानी हो रही है, तब क्या करना चाहिए? (P26-0061)

अगर उसे लग रहा है कि उसे जरूरत है और वह जरूरत बता रहा है, तो आप उसकी हेल्प कर सकते हो। अगर वह उचित तरीके से जीवन जी रहा है, अपने आत्मिक कल्याण के लिए ईमानदारी-सत्कर्म में लगा है, तो ऐसे व्यक्ति की मदद कर देनी चाहिए, सहयोग कर देना चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान कैसे लगाएं? बताइए। (P26-0062)

ध्यान तो लग रहा है आपका। आपको लगाना नहीं है, ध्यान को समझना है — समझ के करना है।

प्रश्न: गुरु जी, दान किसको दें, किसको ना दें, और दान की सही आवश्यकता है — यह कैसे जानें? (P26-0063)

जरूरतमंद को दें। और नहीं जान पा रहे हैं तो आप दान दो ही मत, क्या जरूरत है दान करने की? अगर जांचने की क्षमता है तो दो — जरूरत देखिए; जिसे जरूरत हो, उसका सदुपयोग हो, तो दो; नहीं तो मत दो। और नहीं जांच पा रहे हो तो पड़े रहो जहां पड़े हो।

प्रश्न: गुरुदेव, एक इंसान भगवत प्राप्ति कर लेता है तो उसकी सात पीढ़ी तर जाती है — यह कहां तक सही है? (P26-0064)

मुझे तो बस इतना पता है — जैसा जिसने किया, वैसा उसे परिणाम मिला। बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, प्राणायाम, ध्यान, जाप करना चाहिए या नहीं? (P26-0065)

ये आपके ऊपर है। ईमानदारी-सत्कर्म जरूर करना चाहिए। बाकी क्या करते हो — करो तो भी ठीक, नहीं करो तो भी ठीक। लेकिन ईमानदारी-सत्कर्म एकदम करो।

प्रश्न: गुरु जी, ज्ञान, कर्म, भक्ति योग में बेस्ट कौन सा है? (P26-0066)

ज्ञान, कर्म और भक्ति योग — मूल है कर्म, वो भी ईमानदारी-सत्कर्म से। बाकी कुछ भी इसके बाद अपनाओ तो ठीक, नहीं तो ठीक।

प्रश्न: गुरु जी, हर पल वर्तमान में कैसे रहें? (P26-0067)

बस उम्मीद छोड़ दे।

प्रश्न: गुरु जी, चेतन और अचेतन मन की स्थिति के बारे में विस्तार से बताइए।

(P26-0068)

मन जब बाहरमुखी काम करता है तो उसे चेतन मन कहते हैं। जब बाहरमुखी वो नहीं पाता, तो अचेतन मन में अंदर जाता है — उसे अचेतन मन कहते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, परमात्मा को कैसे जानें? (P26-0069)

निर्विकार हो जाओ।

प्रश्न: गुरु जी, बचपन से सुनते चले आ रहे हैं कि प्रभु या परमात्मा की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, अर्थात् जो हो रहा है सब भगवान की इच्छा से हो रहा है। क्या यह सही है? (P26-0070)

पत्ते के लिए बोला गया है, आपके लिए नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, हमारी माता जी और पत्नी में बहुत झगड़ा होता है, तो सब अलग-अलग चले गए हैं — माता जी अलग, पत्नी अलग। तो हम क्या करें? (P26-0071)

बस आप भी अलग निकल लो। फिर आप क्या कर रहे हो? जब आपको छोड़ के चले गए, आपके लिए तो अच्छा मौका है अपनों की कुटिया में आने का। सब छोड़ ही दिए, तो आप क्या पकड़ के बैठे हो? सबने आपको छोड़ दिया। अपनों की कुटिया का निमंत्रण है, आ जाइए — एक दिन से लेकर आजीवन। आपके लिए तो बहुत अच्छा मौका है; आपको छोड़ना नहीं पड़ा, वो हो गया।

प्रश्न: गुरु जी, कई बार हम एक तरफा डिसीजन लेकर आगे बढ़ जाते हैं, फिर सफलता नहीं मिलती तो विचार आता है कि वह राह पकड़ी होती तो ज्यादा अच्छा रहता। क्या यह अपने प्रारब्ध के हिसाब से होता है? (P26-0072)

आपकी समझ आपको लेकर जाती है। आपका प्रारब्ध तो आपके कर्म से बनता है; आपकी समझ आपको लेकर जाती है। यहां सबको उसके कर्म का परिणाम मिल रहा है। (कई बार हम अति उत्साह में, आवेश-जज्बात में गलत डिसीजन लेते हैं —) आवेश-जज्बात में नहीं आना चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, समझ को कैसे बढ़ाएं? (P26-0073)

धैर्य रखो ना। जैसे दूसरों को सलाह देते हो, तो अपनी उस सलाह पर काम भी करो ना। यह तो आपको करना पड़ेगा। बदलना किसको है? खुद को — तो आप ही को करना पड़ेगा ना। कोई आपको मार्ग बता देगा, और क्या करेगा? आपको भूख लगी, कोई भोजन देगा, भोजन तो आप ही को करना होगा। तो बदलाव के लिए काम तो आपको करना पड़ेगा; दूसरा कोई करे तो आप बदल जाओगे क्या?

प्रश्न: गुरु जी, कई बार किसी काम में नुकसान हो रहा होता है, फिर हम ज्योतिष के पास चले जाते हैं और वह कहता है कि छह महीना-साल भर चुपचाप रहो, कोई नया काम मत करो। क्या ज्योतिष की बात सही है? (P26-0074)

कोई ज्योतिष बोल दे कि छह महीने ब्रह्मचर्य रख लो, तो रख लोगे? वो बात क्यों नहीं मान रहे हो? जब आपके मतलब की कोई बात करता है तो आप मान लेते हो, और जैसे ही आपको मेहनत करनी है, तो कहते हो यह ठीक नहीं है, यह आदमी ठीक नहीं है। जब बेईमानी करते हो तब मुहूर्त निकालने नहीं जाते, ईमानदारी में मुहूर्त निकालते हो। अशुभ काम के लिए मुहूर्त क्यों नहीं निकालते? और देखो, अशुभ काम आपका हो भी जाता है, शुभ में इधर-उधर हो जाता है — क्योंकि अशुभ काम आप पूरी ताकत से किए हो और शुभ काम में आपको संशय था। अगर आपका बुरा समय चल रहा है, तो उसमें तो आपको समझदारी से और मेहनत करने की जरूरत है, चुप बैठने की नहीं। अगर घर में आग लग गई तो वहां बुझाना जरूरी है कि मुहूर्त पूछना? सारा खेल आप खेलते हो और कहते हो मैंने तो कुछ किया ही नहीं, मैं तो एकदम भोला हूं। जिस भोलेपन से, जिस भलेपन से आप गिर रहे हो, ऐसा ना भला करो, ना ऐसा भोला बनो। आत्मिक और बाहरी दोनों स्तर उठने चाहिए, तभी आप समाज में कुछ कर सकते हो। सत्कर्म करने के लिए धन भी चाहिए, तन भी चाहिए, ज्ञान भी चाहिए।

प्रश्न: गुरु जी, बुरे कर्मों का फल तो किसी भी साधक या मनुष्य के लिए भोगना जरूरी है, वरना प्राप्ति में दूरी हो सकती है? सोच यह भी रहती है कि माला जपेंगे, पूजा-पाठ करेंगे तो जो जोर का पड़ने वाला है वह धीमा पड़ेगा। (P26-0075)

जरूर, एकदम। तो मांग यह होनी चाहिए कि मेरे कर्मों के सारे परिणाम मुझे मिल जाएं, मैं भोग लूं — मैं पूरी तरह तैयार हूं, क्योंकि एक भी कर्म बचा तो मैं वंचित रह जाऊंगा। धीमे के चक्कर में आध्यात्मिक यात्रा रुक जाती है; फायदा-नुकसान में हम लग गए, वहीं गड़बड़ हो गया। जैसे देखिए, रामकृष्ण परमहंस कैसर का भोग भोग के गए; माता उन्हें बचा पाई? नहीं — बोलीं अगर हम बचा लेते हैं तो इनका मोक्ष रुक जाएगा। तो माला जपनी है तो प्रार्थना करो कि प्रभु जल्दी से जल्दी दो, हम जल्दी से जल्दी भोगें और आप तक पहुंचें। ईमानदारी इसलिए करो, सत्कर्म इसलिए करो कि जल्दी से जल्दी दो, क्योंकि आपसे मिलने की व्याकुलता हो गई है, यह दूरियां मैं बर्दाश्त नहीं कर पा रहा हूं। जितनी जल्दी भोगेंगे, उतनी जल्दी मिलेंगे; जितना लेट भोगेंगे, उतना लेट होगा। मैं तो परमात्मा से यही कहता हूं — प्रभु इतनी कृपा करना मुझ पर कि कभी कृपा ना करना। जितने मैंने कर्म किए, सबका भोग मुझे भोग लेने देना। इस स्थिति से जीवन-मरण से मुक्ति हो जाती है, क्योंकि सब आप भोग लेते हो तो बचता क्या है? इच्छा-अपेक्षा का जन्म और मृत्यु होता है। आप किसी होटल में कमरा लेकर बिल चुकाकर निकल लिए, तो फिर उस कमरे की तरफ नहीं जाओगे; लेकिन कोई सामान छूट गया, या पेमेंट नहीं चुकाया, तो आना पड़ेगा। लेन-देन से मुक्त तभी होंगे जब अपने कर्मों का हिसाब-किताब पूरा भोग लोगे।

प्रश्न: गुरु जी, क्या इसका मतलब कुछ गलत हो जाने पर कोसना भी गलत है?

(P26-0076)

एकदम — और ज्यादा गलती है। जब रजिस्टर में से कुछ कट रहा था, उस समय कोस के आपने एक और लिखवा दिया। भोग आपका खत्म हो रहा था, लेकिन आपने एक और पैदा कर दिया। जैसे आप जेल में बंद हो गए भोगने के लिए, और आपने सेटिंग से गेट तुड़वा दिया — एक धारा तो लगी थी, एक धारा तोड़ने की और लग गई। सेटिंग तो पकड़ी जाएगी; सेटिंग करने वाले भी नहीं बचेंगे। जज भी फैसला संविधान से सुनाता है; अगर उसका बेटा भी आ जाए और धारा सिद्ध हो जाए तो उसे अपने बेटे को भी सजा सुनानी पड़ेगी। मतलब किसी न किसी तरीके से आपको भोगना ही पड़ेगा। कोई बच नहीं सकता।

प्रश्न: गुरु जी, एक क्रॉस क्वेश्चन है — कोई पूजा करता है गाड़ी-बंगला मिलने के लिए, उसका क्या परिणाम होगा? (P26-0077)

परिणाम पतन होगा, और क्या होगा। गाड़ी आ जाएगी तो पेट्रोल भी चाहिए, रोज पेट्रोल के लिए प्रार्थना करता रहेगा। और गाड़ी तो मेहनत से आएगी, पैसे से आएगी, पूजा से थोड़ी आएगी। एक आदमी दिन भर प्रार्थना-पूजा करे और कहे भोजन बन जाए — ऐसी कृपा लेकर क्या करेंगे, जब कृपा वाला ही हमसे दूर हो जाएगा? जिंदगी में अगर कुछ हो तो कृपा वाला होना चाहिए — कृपा चाहे हो या ना हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। और कृपा नहीं लगे तो कृपा वाले को आना पड़ेगा, कोई रास्ता नहीं। जब आप सब कुछ इस सृष्टि का आंतरिक भाव से पूरी तरह अस्वीकार कर दोगे, तब उसे ही आना पड़ेगा; जब तक संसाधन स्वीकार करते रहोगे, तब तक नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, अपने पास पानी भरा हुआ है और बगल में कोई प्यासा बैठा है, तो उसे पानी पिलाना चाहिए कि नहीं? (P26-0078)

देखिए प्यासा है या नहीं है — यह तो देख लो।

प्रश्न: गुरुदेव, ईमानदारी की परिभाषा क्या है? विस्तार से बताइए। (P26-0079)

कर्म करते हुए छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड ना हो — ईमानदारी बस यही है, यही परिभाषा है।

प्रश्न: गुरु जी, उस परम सत्ता तक पहुंचने में क्या-क्या छोड़ना होगा और क्या पकड़ना है? (P26-0080)

बेईमानी छोड़ना है; ईमानदारी और सत्कर्म पकड़ना है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्म साक्षात्कार क्या होता है, और गांव में रहने वाला अनपढ़ इंसान इसे कैसे समझे? (P26-0081)

जैसे वह हर बात को समझ रहा है, तो उसको भी समझ लेगा। बस लालच छोड़ दे — योग्यता से ज्यादा पाने की उम्मीद छोड़ दे।

प्रश्न: गुरु जी, सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर और कारण शरीर की आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने में क्या भूमिका है? (P26-0082)

बस, अपने आप को सुधारो और आगे बढ़ो। मूल स्थूल शरीर है।

प्रश्न: गुरु जी, संकोच क्या है? जैसे हम किसी से कोई बात कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते। (P26-0083)

कमजोरी। आपकी कमजोरी की वजह से आप दबाव और संकोच में रहते हो। जब आप किसी चीज का संकोच करते हैं तो आप कहीं ना कहीं कमजोर हैं, इसलिए अपनी बात रख नहीं पा रहे — कहीं ना कहीं उसका दबाव है। सूर्य को सुबह आंख में आंख मिलाकर देख लेते हो; दोपहर 1 बजे देख पाते हो? क्यों? उसका ज्यादा हो गया, तो कमजोर आप हो गए। (सामने वाला नाराज हो जाएगा —) नाराज होकर क्या उखाड़ लेगा और खुश होकर क्या दे देगा? नाराज होगा तो आपका कुछ जाएगा, इसलिए तो डर है। उम्र का लिहाज है तो उम्र में वो आपसे बड़ा हुआ, मजबूत हुआ — तुम कहीं से कमजोर हो, इसलिए नहीं कह पा रहे।

प्रश्न: गुरु जी, संकोच कैसे दूर करें? (P26-0084)

अपने आप को मजबूत बनाइए। संकोच कमजोर आदमी रखता है; मजबूत आदमी संकोच नहीं रखता, अपनी बात रखता है।

प्रश्न: गुरु जी, राग-द्वेष की प्रतिक्रिया हम जानते हुए भी करते हैं, उसे कैसे छोड़ें?

(P26-0085)

बस योग्यता से ज्यादा पाने की उम्मीद का त्याग कर दो, राग-द्वेष बनेगा ही नहीं। छोड़ने की भी बात नहीं आएगी — बात ही खत्म करो।

प्रश्न: गुरु जी, कभी हम हर तरह से सामने वाले से मजबूत होते हैं, फिर भी बात इसलिए नहीं रखते कि वह अशब्दों में जवाब दे देगा, या उम्र में बड़ा है तो उसकी मर्यादा का लिहाज करते हैं। तो क्या यह भी कमजोरी कहलाएगी? (P26-0086)

हां, कमजोरी है ना, कहीं ना कहीं। वह गलत शब्दों की वजह से मजबूत है; तुम सज्जन होने की वजह से कमजोर हो। कहीं ना कहीं वह और शब्द बोल देगा, हम सुन नहीं पाएंगे, अच्छा नहीं लगेगा — इसलिए अपनी बात नहीं रख पाते। इस समय उसकी जो कमजोरी आपको दिख रही है, वही उसकी मजबूती बन गई और तुम्हारी कमजोरी बन गई। नहीं तो आप आराम से अपनी बात रख देते।

प्रश्न: गुरु जी, मैं अपने पिताजी को कोई बात समझाना चाहता हूं, लेकिन मन में यह है कि बात रखूंगा तो वे नाराज हो जाएंगे। क्या करूं? (P26-0087)

वही बात — नाराजगी उनकी मजबूती बन गई, तुम्हारी कमजोरी। कहानी तो सुना ही सकते हो — बोल दो कि हमने एक कहानी में पढ़ा, एक पिता था, एक बेटा था, और घुमा-फिराकर अपनी बात रख दो; फिर पूछो कि इसमें कौन सही है, कौन गलत। वे अपने आप समझ जाएंगे। अपनी बात किसी तरीके से आप रख सकते हो, लेकिन कब? जब अहम भाव को नहीं उठाना चाहोगे। ज्ञानी बनकर समझाओगे तो बाप कहेगा — बाप को समझदार बनकर मत समझाओ, बेटा बनकर समझाओ। आप कहिए कि पिताजी, हमें यह बात समझ में आई है, ठीक है या नहीं — पूछ के भी तो समझाया जा सकता है। बाप को बेटे की तरह अपनी बात रखो, समझाओ मत; चाहे पास करें, चाहे फेल करें। समझाना है तो तुम्हारे पास बेटे हैं ना, उनको समझाओ।

प्रश्न: गुरु जी, बात समझ में तो आ गई, फिर भी मुझे लगता है कि आप इससे भी बेहतर तरीके से, और डिटेल में समझा सकते हैं — ज्ञान तो ऐसी चीज है कि जितना मिले ग्रहण कर लो? (P26-0088)

जब दो रोटी में पेट भर गया और कह रहे हो इससे भी अच्छी बनाओ — तीसरी खाओगे तो उल्टी हो जाएगी, और जितना खाया वह भी निकल जाएगा। अगर समझ में आ गया तो उसी समय हां कह दो, उससे आगे मत जाओ, नहीं तो जो समझ में आया वह भी उलट दोगे। एक बार में समझ में आ गया और कह रहे हो और समझाओ — यह ज्ञान नहीं, मूर्खता है। एक आदमी ने तुम्हें रास्ता बता दिया, पता समझ में आ गया, तो दोबारा पूछने की कोई आवश्यकता नहीं; उसे धन्यवाद देकर आगे बढ़ो। अगर हमने प्रश्न रखा और उत्तर समझ में आ गया, तो वहीं बात खत्म कर दें; बात खींचने का कोई मतलब नहीं। और सामने वाले की स्थिति-परिस्थिति भी देखिए — एक व्यक्ति बीमार होकर भी घंटों से आपके लिए बैठा है, और आप कह रहे हो जरा और बेहतर बताइए। मानव की तरह जियो, अपने अंदर मानवता लाओ। बेहतर-बेहतर में सब चला जाएगा, वहीं के वहीं रह जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, जब हम 'कुछ नहीं' का ध्यान करते हैं, तब एक बिंदु-सा आता है जो शांत नहीं होने देता। उसके आगे कैसे जाएं? (P26-0089)

बस आप वो भाव बनाते रहिए। ईमानदारी-सत्कर्म करते हुए आगे बढ़ते रहिए।

प्रश्न: गुरु जी, यदि जीवन में कोई बड़ा पाप हो गया हो, तो उससे कैसे पाप-मुक्त हों? (P26-0090)

अब सत्कर्म करिए बस, और क्या? उसकी भरपाई करें — ईमानदारी से।

प्रश्न: गुरु जी, मैं कौन हूं? (P26-0091)

ये तो आपको पता है आप कौन हो। हर आदमी को पता है मैं कौन हूं, फिर भी वो लोगों से पूछता है मैं कौन हूं। किसे नहीं पता है? शरीर के नाम से जो संसार ने नाम दिया, वो नाम पता है। पता तो हर व्यक्ति को है कि मैं ये हूं; नहीं तो वह अबोध है या पागल है।

प्रश्न: गुरु जी, आध्यात्मिक मार्ग में व्यक्ति का मौन होना, दाढ़ी बढ़ाना, एकांत पसंद करने लगना — क्या ऐसा भी होने लगता है? (P26-0092)

ऐसा कुछ नहीं है। अब कौन जाकर रोज दाढ़ी-बाल कटवाए; एक ही बार में जाकर कभी कटवा देता है। ऐसा कुछ नहीं है। समय देना पड़ता है ना हर काम के लिए।

प्रश्न: गुरु जी, ईमानदारी से चलने वाले व्यक्ति को दुख और विपत्ति का सामना करना पड़ता है, ऐसा क्यों? (P26-0093)

ऐसा कुछ नहीं है। ईमानदार व्यक्ति बहुत सुखी और बहुत प्रसन्न रहता है — जहां तक मेरा अनुभव है।

प्रश्न: गुरु जी, मन और आत्मा में क्या फर्क है? (P26-0094)

मन शरीर के लिए काम करता है। और आत्मा में तो आप स्थिर हो जाइए। अभी तो आप जीवात्मा में हो — अगर आप प्रश्न कर रहे हैं और उत्तर की इच्छा है, तो अभी आप जीवात्मा में हो। तो अपने आप को छुड़ाने का प्रयास करिए; आत्मा में स्थिर हो जाएंगे तो आपके प्रश्न ही खत्म हो जाएंगे।

प्रश्न: गुरु जी, पहले मैं मांगता था कि भगवान सभी को सुखी करे, सभी को सद्बुद्धि दे। फिर एक दिन बैठे-बैठे सोच आया कि यह तो घूम-फिरकर मैं अपने ही बारे में भला मांग रहा हूं — सब अच्छा हो गया तो घूमकर मेरे घर तक और मुझ तक आएगा। क्या यह सही समझ है? (P26-0095)

एकदम। कहीं ना कहीं इच्छा तो है। सब में हम भी तो आते हैं। मानव बहुत चालाक है — जिसके द्वारा पैदा होता है, उसका भी नहीं होता; इतना यह चालाक है। शरीर में आने वाला जीवात्मा इस शरीर में आने के बाद इतना चालाक हो जाता है कि जिसके द्वारा आया, उसका भी नहीं होता; उसको भी उलझाना चाहता है।

प्रश्न: गुरु जी, आजकल लोग ईमानदार को दबाते हैं और संसार साथ नहीं देता, क्या करें? (P26-0096)

मुझे तो नहीं लगता कि ईमानदार को लोग दबाते हैं। ईमानदार को दबा भी नहीं सकते। आप कहीं ना कहीं से कमजोर हो और कहीं ना कहीं से गलती हो रही है, इसलिए दबाया जा रहा है। आप बाइक चला रहे थे, ईमानदार थे, लेकिन हेलमेट नहीं लगाया था — तो फाइन तो भरना पड़ेगा ना; आप कहोगे मेरे साथ गलत किया जा रहा है, पर वहां बेईमानी तो आपसे हो गई। फोर-व्हीलर की लाइट फूटी है, हॉर्न नहीं है, पेपर में गड़बड़ी है — अब आपकी ईमानदारी गाड़ी बताएगी। आप पूरी तरह नियम का पालन तो करिए, आपको कोई नहीं दबाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञान के लिए कौन सा ग्रंथ पढ़ना चाहिए? (P26-0097)

कोई भी पढ़ सकते हो, आपके ऊपर है। आज तक इतिहास में जितने भी ग्रंथ लिखे गए और महापुरुषों ने जो वाणी बोली, वह आत्मज्ञान के लिए नहीं बोली — आपको सुधारने के लिए बोली है। आप बिगड़े हो और आपको सुधारने के लिए बोला गया, और कुछ नहीं। अपनी समझ को विकसित करने के लिए किसी ना किसी का सहारा लेना पड़ेगा। एक बालक सोचे कि किताब लेकर बैठूंगा और पढ़ लूंगा — जिंदगी भर किसी का सहारा ना ले तो पढ़ पाएगा? पढ़ने का तरीका कोई और सिखाएगा, फिर वह कई किताबें पढ़ सकता है। इसलिए तो लोगों ने कहा जीवंत गुरु खोजो — रास्ता बताने के लिए इस पृथ्वी पर आपको जीवंत आदमी ही चाहिए; इसी से थ्योरेटिकल खत्म होता है। और मिलेगा तब, जब आप पूछोगे। प्यास लगी है तो चिल्लाओ मैं प्यासा हूं, तो कई लोग दौड़ेंगे; आप बोल ही नहीं रहे तो कौन पिलाएगा? चिल्लाना पड़ेगा — मैं प्यासा हूं, मैं जिज्ञासु हूं — तब आपको गुरु मिलेगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं प्यासा हूँ, लेकिन उसके लिए खुद से भी कुछ कर सकता हूँ, खुद सुलझा सकता हूँ। फिर भी अपने को पूरा ना देकर मांग करना शुरू कर दूँ कि मैं प्यासा हूँ — तो? (P26-0098)

यह गलत हो जाएगा, यह तो कमजोरी है। उस प्यास बुझाने से आपका अहंकार खड़ा हो जाएगा, समर्पण नहीं होगा, आप में मानवता नहीं जगेगी, आप अहंकारी हो जाएंगे और भटक जाएंगे। आप बोझ उठा सकते थे, लेकिन बोल रहे हो मुझसे नहीं उठ रहा, आप उठा दीजिए — बाद में उस आदमी पर हंसोगे कि मैंने बेवकूफ बना लिया। बेवकूफ आपने लोगों को नहीं, अपने आप को बना दिया; आपका आत्मिक स्तर बहुत गिर गया। जरूरत हो तो बोलिए, नहीं तो ना बोलिए। जब उस आदमी ने आपकी मदद की, तो धन, तन या ज्ञान — तीन में से एक ताकत तो लगाई होगी; आपने उसकी ताकत का दुरुपयोग किया है, अब उसकी भरपाई आपको कई गुना करनी पड़ेगी। प्रकृति का नियम है — जितना बीज बोते हो उसका कई गुना मिलता है, चाहे अच्छा हो चाहे बुरा।

प्रश्न: गुरु जी, अगर अज्ञान में कुछ गलत हो गया, तो उसका सुधार कैसे करें? (P26-0099)

अगर अनजाने में हो गया, तब तो बात ही खत्म। रास्ते में जा रहे हैं, लाखों जीव हमारे पैरों के नीचे मर जाते हैं — एक का भी दंड नहीं है। प्लानिंग से मारेंगे तो दंड है।

प्रश्न: गुरु जी, मक्कारी का मतलब क्या होता है? (P26-0100)

मक्कारी का मतलब होता है कि आप पर किसी ने विश्वास किया और आपने उसे समय-समय पर धोखा दिया, उसके विरोध में ही खड़े हो गए। पहले आपने उसे आश्वासन दिया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और फिर आप उसके ही विरोधी के साथ खड़े हो गए — यह मक्कारी है। बहुत सोच-समझ के जीवन जीना है, सोच-समझ के काम करना है। बहुत समझदारी की यात्रा है अध्यात्म। समझ के जीना ही साधना है; अलग से साधना नहीं करनी है।

प्रश्न: गुरु जी, जन्म और मृत्यु से कैसे मुक्त होते हैं? (P26-0101)

इच्छा-अपेक्षा से मुक्त होने के लिए काम करो।

प्रश्न: गुरु जी, वासना और काम भाव से कैसे बचें? (P26-0102)

वासना क्या है? बेईमानी वासना है। कुछ भी बेईमानी से मत करो, बस बात खत्म। काम भाव है तो उसे ईमानदारी से करो।

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान जरूरी है क्या — आत्मज्ञान के पहले या बाद? या चिंतन ही काफी है? (P26-0103)

चिंतन ही काफी है। ध्यान है क्या? ईमानदारी और सत्कर्म बहुत जरूरी है।

प्रश्न: गुरु जी, आजकल की भागदौड़ और जिम्मेदारियों से मन विकल हो जाता है। क्या लंबे समय के बाद संन्यास से भी मन ऊब जाता है? (P26-0104)

संन्यास का मतलब अपनी बुराइयों का नाश कर देना। अगर बुराइयों का नाश कर दिए, तो बात ही खत्म हो गई।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान या अपने स्वरूप को जानना भी क्या माया का ही जाल है? (P26-0105)

नहीं। पकड़ना माया का जाल है, छोड़ना नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, सांसारिक चिंतन से दिमाग खराब हो जाता है, इससे कैसे बचें? (P26-0106)

आपको जो करना है वह करो ना। आप चिंतन अलग से क्यों कर रहे हो? आपको जो करना है वह करो, आप परेशान मत हो।

प्रश्न: गुरु जी, हम घर पर रहते हैं, तो किस प्रकार आत्मज्ञान की प्रक्रिया को साथ लेकर चल सकें? (P26-0107)

ईमानदारी और सत्कर्म। जब भी आप कमा रहे हैं, आपकी इनकम ईमानदारी की हो; भूखे को भोजन, प्यासे को पानी; आंतरिक ईमानदारी, मेहनत, और मेरे कर्म से किसी को तकलीफ ना हो — इसका विशेष ध्यान रखते हुए आगे बढ़ो।

प्रश्न: गुरु जी, अगर कोई वरिष्ठ अधिकारी आपको ऐसे काम में डाले जो आपके लायक नहीं है, तो क्या करें? (P26-0108)

नहीं करना चाहिए। मैं इतना समझा हूँ कि अगर कोई कुछ जबरदस्ती करवा रहा है, तो पीछे आने का एक रास्ता है — कह दो मुझे नहीं करना है; यह स्वतंत्रता है। जिस पद पर आप हो, उस पद का काम ईमानदारी से करो, बस बात खत्म। काम को काम के तरीके से करो, काम को अपने तरीके से मत करो, और आगे बढ़ो।

प्रश्न: गुरु जी, गुरु का आशीर्वाद क्या है? विस्तार से बताइए। (P26-0109)

शब्दों के द्वारा गुरु आशीर्वाद देता है, और उन शब्दों में आप जीते हो तो आपका आत्मिक कल्याण होता है।

प्रश्न: गुरु जी, निर्विकार होना मुश्किल क्यों होता है? (P26-0110)

विकार को धारण करना भी बड़ा मुश्किल था, लेकिन आपने बहुत सोच-समझ के धारण किया। तो निर्विकार होने के लिए आप प्रयासरत रहिए, अपने आप को करा सकते हैं।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा अलग और कर्ता कोई और — यह कैसे है? (P26-0111)

जैसे मुंह के अंदर है तो लार है, और बाहर आ गया तो थूक। पानी नॉर्मल जगह है तो पानी है, फ्रिज में गया तो बर्फ हो गया। ऐसे ही जब आप अपने आप को कर्ता समझ लेते हैं, तो आत्मा जीवात्मा हो गई; और कर्ता से मुक्त हो गए तो आत्मा में स्थिर हो गए। बस इतनी सी बात है।

प्रश्न: गुरु जी, बुद्धि और अंतर्मन में क्या फर्क है? (P26-0112)

बुद्धि से हम जानकारी का आदान-प्रदान करते हैं। और मन — एक होता है चेतन मन, जो बहिर्मुखी होकर हम वर्तमान में ग्रहण कर रहे हैं, उसे बहिर्मुखी मन, चेतन मन कहते हैं; और अचेतन मन उसे कहते हैं जो हमने जमा कर लिया है।

प्रश्न: गुरु जी, यदि अध्यात्म और परिवार में से किसी एक को चुनना हो, तो कैसे चुनें? (P26-0113)

वो आपके ऊपर है, आप देख लो। सर्वप्रथम आत्मिक कल्याण। और परिवार को छोड़ने की जरूरत नहीं है। छोड़नी है अपनी बेईमानी, अपनी चापलूसी, अपनी चालाकी — छल, कपट, चोरी, बेईमानी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड — इतना छोड़ना है, परिवार नहीं छोड़ना। कुछ छोड़ के नहीं होगा अगर आपने यह नहीं छोड़ा। बेईमानी छोड़नी है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा संसार में क्यों आई? क्या बिना परमात्मा की इच्छा से ऐसा हुआ है? (P26-0114)

देखिए, आत्मा में स्थिर हो जाइए। अगर हम आए हैं तो अपनी मर्जी से आए, इसलिए हमें अपनी मर्जी से जाने के लिए प्रयास किया जा रहा है, करवाया जा रहा है, बोला जा रहा है। नहीं तो अगर हम उसकी मर्जी से आते, तो हमें वो बुला लेता।

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान लगता नहीं, क्या करें? (P26-0115)

ध्यान लग तो रहा है, लेकिन आप और कहीं लगाना चाहते हो — गड़बड़ यह है। ध्यान खूब लग रहा है। तो ध्यान में ध्यान करें।

प्रश्न: गुरु जी, सनातनी कौन है? (P26-0116)

सनातन का मतलब होता है जिसका नाश नहीं होता — वह सत् है।

प्रश्न: गुरु जी, दिल में या हृदय में ग्लानि ना उठे, इसके लिए क्या करें? (P26-0117)

वैसा काम मत करो, बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरुदेव, यदि कोई चाहकर भी वह नहीं कर सकता जो आप बताते हैं, तो क्या उसका कल्याण नहीं होगा? (P26-0118)

अब देख लो क्या होगा, मैं कैसे कह सकता हूँ? मुझे जितना समझ में आया है, उतना आप लोगों को बता रहा हूँ। कैसे कल्याण होगा, कैसे नहीं — यह आपको समझना है। आपका कल्याण आप जानो।

प्रश्न: गुरु जी, अगर आत्मज्ञान संतुष्टि है, तो इसकी चाहत भी क्या स्वार्थ नहीं है?

(P26-0119)

नहीं, क्योंकि सब छोड़ना है, पाना कुछ भी नहीं। बाहर का कुछ नहीं पाना है; अपनी मूल स्थिति को पाना है — कोई इच्छा नहीं।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आप अवतार को मानते हैं? (P26-0120)

जिसने अपने आप को समझ लिया, वह अवतार; जिसने नहीं समझा, वह इंसान। बस इतनी सी बात है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आपने समाधि का अनुभव किया है? (P26-0121)

चलते-फिरते किया हूँ — चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, आते-जाते।

प्रश्न: गुरु जी, नए साल पर भगवान से क्या मांगें और भगवान को क्या समर्पित करें? (P26-0122)

वो आप जानो, भगवान जाने; मैं कैसे बताऊँ? तीसरे को क्यों लाते हो? दो के बीच में तीसरे को लाना बंद करो। ईमानदारी-सत्कर्म करके जीवन में आगे बढ़ो, अपना आत्मिक कल्याण करो।

प्रश्न: गुरु जी, मोक्ष क्या है? (P26-0123)

"क्या है" से अपने आप को छुड़ाओ, आत्मज्ञान तक पहुँचो। जब पाप-पुण्य का पूरी तरह भोग लो, तो मोक्ष होता है।

प्रश्न: गुरु जी, मन और बुद्धि के बीच क्या अंतर है? अहंकार और बुद्धि में क्या अंतर है? (P26-0124)

बुद्धि इस शरीर में है — जानकारी का आदान-प्रदान करती है। और मन शरीर के लिए काम करता है; वो है भी, नहीं भी है — वो "चाहिए" में आता है। बुद्धि शरीर के लिए काम करती है, पांच इंद्रियों के द्वारा जानकारी का आदान-प्रदान करती है। और अहंकार — जब आप कुछ बनना चाहते हो, किसी को नीचा दिखाना चाहते हो, तो अहम भाव पैदा होता है। अहम भाव के बाद जब किसी घमंड की वजह से प्रतिक्रिया देते हो, तो वहां अहंकार प्रकट हो जाता है।

प्रश्न: गुरु जी, नाम जप के लिए मन एकाग्र कैसे करें? (P26-0125)

एकाग्र आपको होना है। मन तो शरीर के लिए काम करता है। आप देखिए क्या आपके लिए उचित है, क्या अनुचित है — वो देख के आगे बढ़िए।

प्रश्न: गुरु जी, महापुरुष लोग वट वृक्ष के नीचे ही ध्यान मग्न क्यों होते हैं, क्या वहां सरलता से हो जाते हैं? (P26-0126)

ऐसा कुछ नहीं है। वृक्ष मिल गया है — ऐसी कोई प्लानिंग नहीं थी कि कुटिया बड़ के बगल में बनेगी। मैं बचपन से सुनता था कि बड़ के पेड़ को देव वृक्ष माना जाता है, लेकिन प्रत्यक्ष नहीं था। जब मई-जून की गर्मी में मैं यहां इसके नीचे सोता था, तो दोपहर को मैंने देखा कि सब लोग अपने घरों में कूलर-एसी के सामने छिप के बैठे हैं, और हजारों-लाखों जीव इस पेड़ पे चहक रहे हैं, भोजन कर रहे हैं, खुश हैं। वृक्ष होने के बाद भी लाखों जीवों को भोजन करा रहा है — इसलिए इसे देव वृक्ष कहा जाता है। इस संसार में अगर कुछ कहा गया है तो उसके पीछे कोई रहस्य है; वहां जाओगे, रहोगे, तब वह रहस्य समझ में आएगा — बस देख के नहीं। बचपन से माथा टेकता था, प्रणाम करता था, लेकिन वो थोपा हुआ था, प्रत्यक्ष नहीं था; यह बात मुझे 40 साल में समझ में आई। कहने का मतलब है — किसी को समझना है तो उसके साथ रहो, उसके साथ जियो; तब समझ में आएगा कि वो कैसा है, तब आप उससे कुछ सीख पाएंगे। आए और गए, तो आपने कुछ नहीं सीखा।

प्रश्न: गुरु जी, मन और अहंकार दोनों का उत्तर समझ में आ गया, लेकिन बुद्धि शरीर में कैसे है, यह समझ नहीं आया। बुद्धि तो मन से भी सूक्ष्म चीज है ना? (P26-0127)

बुद्धि यही सामने है — आदान-प्रदान है। आंखों से देखते हैं; देख के अंदर लेने वाला है, और वह इंद्रियों द्वारा ले रहा है। तो बुद्धि से हम समझते हैं क्या अच्छा है, क्या बुरा है — जानकारी का लेना और देना।

प्रश्न: गुरु जी, ईश्वर की प्रेम लक्षणा भक्ति कैसे प्राप्त करें? (P26-0128)

ईमानदारी से जीवन जीते हुए, सत्कर्म करके, बस उसकी दुनिया में कुछ करो।

प्रश्न: गुरु जी, भक्त आदमी आर्थिक रूप से परेशान क्यों होता है? (P26-0129)

इसलिए कि अब भक्ति कर रहा है; पीछे बड़ी गड़बड़ी किया था, अब वो सब सामने आ रहा है। भक्ति की जरूरत क्यों पड़ी? क्योंकि गड़बड़ था — नहीं तो भक्ति भी क्यों कर रहा? वही कहावत है ना — दुख में सुमिरन सब करें। कहीं ना कहीं अच्छा भी आएगा। गड़बड़ी नहीं करोगे तब; और गड़बड़ी करोगे तो फिर गिरोगे। गड़बड़ी करना छोड़ दो।

प्रश्न: गुरु जी, हमको गुरु तो मिला है, फिर भी मन इधर-उधर भटक रहा है, इसका क्या करें? (P26-0130)

भटकने दो। आपको क्या करना है, वो देखो।

प्रश्न: गुरु जी, आप परम मुक्ति को कैसे प्राप्त हुए? (P26-0131)

जो प्राप्त था, वो खत्म हो गया। कुछ रहेगा ही नहीं — जब कुछ नहीं रहेगा, तुम ही रहोगे।

प्रश्न: गुरु जी, क्या गाय की पूंछ पकड़ के बैतरणी पार होगी? क्या गाय दान से मोक्ष होता है? (P26-0132)

बस यही पकड़ के कोई नदी पार करो पहले — प्रत्यक्ष में एक बार गाय की पूंछ पकड़ के देख लो, लात मारेगी तो दवाखाना जाओगे। इन सब भ्रांतियों से मुक्त हो, कर्म करो — कर्म आपको ले जाएगा। जिंदगी भर पाप किए और अब गाय दान कर दो, गाय तुम्हें उतारेगी? ये तो बेईमानी वाला सौदा हो गया। कर्म मूल है; ईमानदारी-सत्कर्म से जीवन जियो, आपका कर्म आपको ले जाएगा। गौ माता है, माता बोलते हो, सम्मान करो — लेकिन बैतरणी तो ऐसी नदी बताई है जिसमें आग निकलती रहती है; अगर उसे मां मानते हो तो इतनी बुरी जगह गाय को क्यों ले जा रहे हो? आप तो अपने कर्म से जा रहे हो, गाय ने क्या बिगाड़ा है आपका? और जब गाय पार करा देगी, तो फिर क्यों बोलते हो कि मोक्ष के लिए प्रयास करो, आत्मज्ञान को उपलब्ध हो? ये दोहरी बात है — शॉर्टकट की, सेटिंग की आदत पड़ गई है।

प्रश्न: गुरु जी, बोलना बहुत आसान है कि छोड़ दो, पर विचारों को भी नहीं छोड़ पाते? (P26-0133)

कर सकते हो — अगर प्रयासरत रहोगे तो कर सकते हो। कोई भी अगर उस स्थिति में उपलब्ध हुआ है, तो उसका इतिहास उठाइए — देखो कि वो भी पहले बहुत परेशान था, लेकिन उस परेशानी से निकलने के लिए उसने प्रयास किया। आप भी कर सकते हो। आनंद तो आप में है; कुछ को पकड़ कर आनंद में नहीं, सुख में जाओगे — कुछ को छोड़ोगे तब आनंद में जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मज्ञान के बाद अहंकार का नाश होता है कि नहीं? (P26-0134)

आत्मज्ञान के बाद तो अहंभाव रह ही नहीं जाता, तो अहंकार कहां से आएगा?

प्रश्न: गुरु जी, अगर किसी ने पूरे जीवन पाप किए और सत्संग सुनने के बाद सन्मार्ग अपनाया, तो क्या उसको ज्ञान हो जाएगा? (P26-0135)

हां, जिस दिन उसकी पूरी भरपाई हो जाएगी, उस दिन उसको आत्मज्ञान हो जाएगा। क्यों नहीं होगा? यह तो होगा ही होगा। जितना किए, उसकी भरपाई कर लो — बस बात खत्म।

प्रश्न: गुरु जी, संदेह व दुविधा कैसे छूटे और श्रद्धा कैसे बढ़े, इसके लिए हम क्या करें? (P26-0136)

प्रत्यक्ष हो जाएगा तो अज्ञानता छूट जाएगी; प्रत्यक्ष नहीं होगा तो अज्ञानता बनी रहेगी। सीधी सी बात है।

प्रश्न: गुरु जी, हमारे पास ईश्वर की दो अमूल्य निधि हैं — शरीर और मन, और ये दोनों ऊर्जा से संचालित हैं। इन तीनों का जीवन में समन्वय कैसे करें? (P26-0137)

बस ईमानदारी और सत्कर्म अपना लो, अपने आप हो जाएगा। आपको कुछ नहीं करना है — आप समझ के बस ईमानदारी से सत्कर्म करो।

प्रश्न: गुरु जी, साधु और संत में क्या अंतर है? और महात्मा और मुनि में क्या अंतर है? (P26-0138)

साधु ही संत की स्थिति है — साधना करके जिसने अपनी धूल को साफ कर लिया, वह साधु से संत हो गया। साधु अभी साधक है; संत एक स्थिति है। मुनि तो जैसे जैन मुनि को कहते हैं, साधु को मुनि कहते हैं। और महात्मा — जो अपने परम सत्य को जान लिया, स्थिर हो गया।

प्रश्न: गुरु जी, चोरी करके अगर कोई दान करे, तो उसका क्या फल मिलता है? (P26-0139)

बस श्राप मिलेगा सामने वाले का, और क्या मिलेगा।

प्रश्न: गुरु जी, मैं भरपाई कैसे करूं — क्या इसी जन्म में हो जाएगी? अगर मैंने इसी जन्म में ईमानदारी और सत्कर्म अपना लिया, तो क्या पिछले सभी पापों से मुक्ति मिल जाएगी? (P26-0140)

हां, हो जाएगी — क्यों नहीं हो जाएगी? ईमानदारी से सत्कर्म करो और आगे बढ़ो। हां, एकदम मुक्ति मिल जाएगी, क्यों नहीं मिलेगी?

प्रश्न: गुरुदेव, सही क्या है हमें पता है, फिर भी हम उस पर क्यों नहीं चल पाते? (P26-0141)

इसलिए कि आप गलत में रस लेने लगे हो — गलत आपको ठीक लगने लगा है, अच्छा लगने लगा है।

प्रश्न: गुरु जी, अज्ञान और ज्ञान का अंतर क्या है? (P26-0142)

अज्ञान वो है जो प्रत्यक्ष नहीं है; ज्ञान वो है जो प्रत्यक्ष है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या अज्ञानता को ही जीव कहते हैं? (P26-0143)

इच्छा-अपेक्षा में आत्मा ही जीवात्मा हो गई।

प्रश्न: गुरु जी, सेवा क्या है? (P26-0144)

जब आप जरूरतमंद की सेवा प्लानिंग से करते हो, वह सेवा है। और जरूरत में जब किसी जरूरतमंद की करते हो, तो वो सत्कर्म है।

प्रश्न: गुरु जी, अंदर ध्यान केंद्रित करने से आज्ञा चक्र, सहसार चक्र, अनाहत चक्र में ऊर्जा का दबाव महसूस होने लगता है। क्या यह साधना में आगे बढ़ने की निशानी है, क्या आज्ञा चक्र खुलने के लक्षण हैं? (P26-0145)

ईमानदारी से सत्कर्म करो, बाकी देखते रहो।

प्रश्न: गुरु जी, सबसे बड़ी भक्ति क्या है? (P26-0146)

कुछ नहीं चाहिए, और कुछ करना जरूरतमंदों के लिए — यही है भक्ति।

प्रश्न: गुरु जी, मन क्या है और इसको कैसे जान सकते हैं? (P26-0147)

मन "क्या" में काम करता है। जानने की जरूरत नहीं है — कैसे जानोगे? मोबाइल-कंप्यूटर चलाते हो, कहो कि मैं उसके एरो को जानना चाहता हूं — जान के क्या करोगे? एक बाल को, एक रोएं को जानोगे, तो क्या करोगे? बिना मतलब की बात है।

प्रश्न: गुरु जी, कुछ लोग बहुत छल करते हैं, क्या करें? (P26-0148)

छोड़ दो, उनका त्याग कर दो।

प्रश्न: गुरु जी, कल के सत्संग में आपने बताया कि परीक्षा होती है, कभी भी हो सकती है — इस पर थोड़ा और प्रकाश डालें। (P26-0149)

आप कुछ भी करेंगे तो परीक्षा तो देनी पड़ेगी। इसमें प्रकाश क्या डालें — समय आएगा, परीक्षा होती है।

प्रश्न: गुरु जी, भाग्य क्या है? मेहनत तो सभी करते हैं, फिर किसी को 500 मिलता है तो किसी को लाखों — यह भाग्य है या योग्यता? (P26-0150)

आपने ऐसा कर्म किया, आपको आगे मिलता है — वही भाग्य है। जैसा करोगे वैसा परिणाम मिलेगा, बस सीधी सी बात है। यहां योग्यता से मिलता है, कृपा से नहीं। यह बल्ब सामने लगा है, यह कम उजाला दे रहा है, वो ज्यादा — क्या इस पे कम कृपा, उस पे ज्यादा कृपा है? इसकी योग्यता ज्यादा है, इसकी कम। इसे यहां लगाओ या वहां, यह अपनी ही औकात दिखाएगा। यहां योग्यता से सब कुछ मिलता है, और जब मिलता है तो उसी को भाग्य कहते हैं। कोई गुरु या भगवान आपके कर्म का आशीर्वाद या श्राप नहीं दे सकता। और जो बेईमानी से, सेटिंग करके पा रहा है, वो बाद में उसकी भरपाई भी करेगा।

प्रश्न: गुरु जी, हमारे यहां एक आदमी चने बेचता था और आज करोड़ों-अरबों की संपदा है, कोई विशेष योग्यता नहीं थी — फिर ऐसा कैसे हो सकता है? (P26-0151)

चना बनाने की उसकी क्वालिटी होगी, चना बिकता होगा, लाइन लगती होगी। उसका पूरा इतिहास निकालो, समझ में आ जाएगा। योग्यता आप बस बाहरी शिक्षा से मत नापिए — एक हॉस्पिटल चलाने वाला एक-दो क्लास पढ़ा हो सकता है, लेकिन उसके यहां डॉक्टर-इंजीनियर काम कर रहे हैं। उसका अनुभव, उसकी मेहनत, उसकी लगन होगी, बनाने का तरीका अलग होगा। हो सकता है उसने 1 लाख की प्रॉपर्टी खरीदी और बगल में एयरपोर्ट आ गया, करोड़ की हो गई — लेकिन जिन्होंने वहां लिया था सबका बदला; आपने लिया होता तो आपका भी बदलता। इसमें मेन कर्म है — मैंने कर्म को ही समझा है।

प्रश्न: गुरुदेव, जैसे ये लोग आपके पास सत्संग में आ रहे हैं, तो क्या इनके कर्म नहीं बन रहे हैं? क्या यह गुरु का आकर्षण है, आने की तीव्र इच्छा क्यों होती है?

(P26-0152)

समझ बढ़ रही है ना आपकी — आपको समझने के लिए कुछ मिल रहा है, जो आप खोज रहे थे वह आपको मिल रहा है। इसलिए व्यक्ति वहीं जाता है जहां उसे उसकी खोज मिलती है। शब्दों के पीछे कुछ समझ में आ रहा है, इसलिए उससे प्रेम हो रहा है। बालक घर में उसी की गोद में कूदेगा जिससे कुछ मिलता होगा — जो चॉकलेट लाता होगा; जिस दिन नहीं लाओगे, वो रूठ जाएगा। हर जीव वहीं जाता है जहां उसे कुछ मिलता है, या मिलने का आश्वासन होता है; नहीं तो नहीं जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, कम समय में आत्मा में कैसे टिके रह सकते हैं? (P26-0153)

उम्मीद छोड़ दो, बस बात खत्म।

प्रश्न: स्वामी जी, पुराणों को भी शब्द प्रमाण माना गया है और जीवंत गुरु भी प्रामाणिक है; परंतु विरोधाभास होने पर क्या गुरु ही सही माना जाएगा? (P26-0154)

जीवंत है ना वो — प्रत्यक्ष बोल रहा है। और जो किताबों से बोला जा रहा है, वो प्रत्यक्ष नहीं है। जीवंत गुरु प्रत्यक्ष बोल रहा है, बात भी समझ में आ रही है, उसका तर्क भी समझ में आ रहा है। जब उसने सिद्ध कर दिया, प्रत्यक्ष हो गया, तब आप कैसे नहीं मानोगे? मानना ही पड़ेगा।

प्रश्न: गुरु जी, नाम स्मरण और मंत्र, या हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ कब किया जाए? (P26-0155)

जब आपकी इच्छा — आपके ऊपर है। भोजन चाहे जब भी करो, भूख लगेगी तो भूख मिटाएगी, उसका काम है। तो आप चाहे जब जप करो, आपके ऊपर है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या आप कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मिले हो जिसे देख के आपको लगा हो कि इनको आत्मज्ञान है? (P26-0156)

अभी तक तो ऐसा मिला नहीं है।

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान का असर कुछ देर तो रहता है, लेकिन बाद में उतर क्यों जाता है? (P26-0157)

जैसे हमने बताया, वैसे ध्यान में ध्यान करो।

प्रश्न: गुरुदेव, विचार शून्य कैसे हों? (P26-0158)

जब तक उम्मीद है, तब तक विचार शून्य कैसे हो सकते हो? और विचार तो आते ही रहेंगे — आप निर्विकार हो गए तो भी विचार आएंगे। भूख लगेगी, भोजन मांगोगे, तो विचार आया तभी ना — भूख का विचार आया, भोजन कहाँ मिलेगा उसका विचार आया।

प्रश्न: गुरु जी, वैराग्य कैसे होता है? (P26-0159)

जब समझ में आता है कि जो मैं कर रहा हूँ ठीक नहीं है, तो व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्त होने के लिए काम करता है।

प्रश्न: गुरु जी, आपने अपने जीवन में डर से मुक्ति कैसे पाई? और सामर्थ्यवान कैसे बना जा सकता है? (P26-0160)

बस सामर्थ्यवान बनिए। (सामर्थ्यवान कैसे बनें —) क्या चाहिए, उसके लिए काम करो — धन, तन, ज्ञान।

प्रश्न: स्वामी जी, किसी से भी उम्मीद नहीं है, फिर भी कई लोग कुछ कह के आत्मा को सता देते हैं, उस समय क्या करें? (P26-0161)

बस अपने आप को बचा लो, और क्या करोगे?

प्रश्न: गुरु जी, ध्यान करते हैं लेकिन ध्यान लगता नहीं, उपाय बताइए। (P26-0162)

कहां लगाना चाहते हो? ध्यान तो हर वक्त लग रहा है।

प्रश्न: गुरु जी, क्या काम साधना में बाधक है? (P26-0163)

नहीं, कुछ भी बाधक नहीं है। बाधक बस बेईमानी है।

प्रश्न: गुरु जी, कौन सा संत संपूर्ण है, कैसे पता चलेगा? (P26-0164)

आप देखो आप पक्के खोजी हो या नहीं — सब समझ में आ जाएगा।

प्रश्न: गुरु जी, प्रश्नों का अंत तो नहीं हो सकता — अभी तक जितने प्रश्न हुए, ऐसे ही होते जा रहे हैं? (P26-0165)

क्यों नहीं हो सकता? प्रश्नों का अंत होगा तभी आप बचोगे; उसके बाद ही तो ज्ञान होगा। जब तक प्रश्न है, तब तक ज्ञान थोड़ी ना होगा। प्रश्न का अंत आपको करना है — जो प्रश्न आप लाए हो, उसे उत्तर के द्वारा निकालना है। रोज-रोज वही भोजन करते हो, शरीर को ऊर्जा मिलती है; जैसे भूख लगी, खाना खा लिया — वैसे ही ये सिस्टम चल रहा है।

प्रश्न: गुरु जी, एक शिविर में ध्यान में मन अंदर से बाहर खिंचने लगा, कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, तो डर सा लगा और आंखें खोल दीं। आंख बंद करके अंदर जाते समय डर क्यों लगता है, और इस डर को कैसे मिटाया जाए? (P26-0166)

वो किसी प्रभाव में हुआ — वो साउंड का, बाहर का प्रभाव था, वो ज्यादा देर टिकता नहीं; ये अपने आप होना चाहिए। डर छूटने का लगता है — बाहर कुछ है ना, छोड़ के जा रहे हो। आप यहां से जा रहे हो और आपकी कोई वस्तु छूट गई, तो उसकी याद आएगी, उसके लिए लौट आओगे; अगर सब कुछ लेके गए हो तो लौटने की जरूरत नहीं। जैसे गांव से सब कुछ — मां-बाप, खेत, परिवार — लेके निकल आए और फोन आए कि गांव डूब गया, तो आप खुश होंगे कि बच गया। आप जा तो रहे हो, लेकिन किसी प्रभाव से, और छोड़ के नहीं जा रहे, इसलिए एकदम भय होता है और झट से वापस आ जाते हो। इस डर को मिटाने के लिए सत्संग सुनिए और समझ-समझ के आगे बढ़िए।

प्रश्न: गुरु जी, गुरु मंत्र देते हैं और कहते हैं कि गुरु मंत्र जाप करने से गुरु तत्व मिलेगा और गुरु तत्व हमेशा रक्षा करता है — क्या यह सत्य है? (P26-0167)

रक्षा आपका कर्म करेगा। ये बात वो बोलते हैं जो मंत्र देते हैं — उनसे पूछो। हम तो यही दे रहे हैं — ईमानदारी और सत्कर्म।

प्रश्न: गुरु जी, जो माला जपते हैं, अगर उस माला का सुमेरु टूट जाए तो क्या माला जप सकते हैं या नहीं? (P26-0168)

दूसरी माला ले लो, या सुमेरु बनवा लो।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा के लिए साधना करनी चाहिए कि समाज की सेवा का काम करना चाहिए? (P26-0169)

सेवा में ही तो आपको छुड़ाना है। आत्मा के लिए क्या काम करेंगे? आपको बाहर से छुड़ाने के लिए काम करना ही तो पड़ेगा — वो है सत्कर्म, ईमानदारी। मूल तो आपको सेवा करके अपने आप को निकालना है; ईमानदारी और सत्कर्म करिए और सत्संग सुनिए।

प्रश्न: गुरु जी, गृहस्थ जीवन में विकारों से कैसे बचें? (P26-0170)

बोलचाल में शुद्ध भाषा का उपयोग करो, लेनदेन में शुद्ध भाषा का उपयोग करो, ठीक शब्द का उपयोग करो, और ईमानदारी से आपका इनकम हो। सबसे बड़ी बात यह है — आपकी कमाई शुद्ध हो।

प्रश्न: गुरु जी, बेईमानी क्या है? (P26-0171)

किसी के साथ छल, कपट, चोरी, चापलूसी, मक्कारी, धूर्तता, पाखंड करना — बेईमानी है।

प्रश्न: गुरु जी, धारणा, ध्यान, समाधि, तुरीय और ब्रह्म को थोड़ा समझा दीजिए।

(P26-0172)

धारणा का मतलब होता है आपको क्या चाहिए; फिर उसके लिए काम होने लगता है, उस पर ध्यान घटित हो जाता है। और फिर समाधि — समाधि मतलब "कुछ नहीं चाहिए" वाली स्थिति आ जाती है। फिर तुरीय, और उसके बाद ब्रह्म की यात्रा।

प्रश्न: गुरु जी, आप बोलते हैं कि अपने आत्मसम्मान की रक्षा करो — इसका क्या अर्थ है? (P26-0173)

ऐसा कोई काम मत करो जिससे आपका आत्मसम्मान गिरे — बस यही है आत्मसम्मान की रक्षा करना। गिरने वाला काम करते रहोगे, तो रक्षा कैसे होगी?

प्रश्न: गुरु जी, अगर कोई भिखारी अचानक सामने आ जाए, तो उसको भीख देनी चाहिए या नहीं? (P26-0174)

जरूरत देख लीजिए।

प्रश्न: गुरु जी, क्या शरीर में होना ही बंधन है? और कर्म का भोग क्या आत्मा भोगती है? (P26-0175)

नहीं — किसी और में, इच्छा-अपेक्षा में लिप्त रहना बंधन है। (कर्म का भोग —) जीवात्मा भोगती है।

प्रश्न: गुरु जी, आत्मा को कैसे जाना जा सकता है, कैसे पहचानें? (P26-0176)

राग-द्वेष में फंसे हो — पहले उससे अपने आप को छुड़ाइए। पहचानने वाले को हटाइए; कौन किसको पहचानना चाहता है, उसे पकड़ो पहले।

प्रश्न: गुरु जी, जरूरत और इच्छा-अपेक्षा का फर्क कैसे समझें? (P26-0177)

ये आपको समझना है। आप देखिए सामने वाला जरूरत में है या नहीं। भूख लगी है तो भोजन करेगा — भोजन दीजिए और करेगा, तो समझ लेना जरूरत है। नहीं तो किसके लिए ले जाओगे? देख लो।

प्रश्न: गुरु जी, राग-द्वेष क्या है? (P26-0178)

राग का मतलब लगाव; द्वेष का मतलब नफरत।

प्रश्न: गुरु जी, विचार कहाँ से उत्पन्न होते हैं? क्या हम विचारों को कंट्रोल कर सकते हैं, निर्विचार हो सकते हैं? (P26-0179)

जब मेरा जन्म हुआ तो मुझे कुछ पता नहीं था; एक बालक को कुछ पता नहीं होता, नाम से लेकर माता-पिता, भाई-बहन सब उसके अंदर बाहर से भरा जाता है। समझने की क्षमता अंदर होती है। हम पांच इंद्रियों द्वारा — रूप, शब्द, गंध, रस, स्पर्श से — जानकारी इकट्ठा करते हैं। आंख बंद करके बैठे हो और कोई सड़ी चीज सामने रख दे, तो सूंघते ही विचार उस गंध में चला जाएगा; संगीत बजे तो संगीत में, कांटा चुभे तो दर्द में। कहने का मतलब है — विचार बाहर से आता है, अंदर से पैदा नहीं होता; समझने वाला अंदर है। तो जो बाहर से पैदा हो रहा है, उससे मुक्ति कैसे पाओगे? दुनिया में कहीं भी जाओ, रूप-शब्द-गंध-रस-स्पर्श मिलेंगे। निर्विचार नहीं हो सकते, निर्विकार हो सकते हो। आप उन्हीं विचारों से परेशान रहते हो जिनमें राग-द्वेष है, बाकी हर विचार से परेशानी नहीं। और मन को रोकने की बात — मन "चाहिए" में काम करता है। अगरबत्ती जलेगी तो धुआं निकलेगा; एक तरफ अगरबत्ती जला रहे हो, एक तरफ धुआं रोक रहे हो — कैसे संभव है? बटन एक है, बंद कर दो — वो बटन है "कुछ नहीं चाहिए"। मन आपको इंगित करता है — भूख लगी, प्यास लगी, कौन बताता है? मन आपका सबसे वफादार साथी है; इंगित करना उसका काम है, करना-ना करना आपके ऊपर है। मलाई खुद खाते हो और दोष मन को देते हो। शरीर में जितना भी सिस्टम दिया गया है उसका कुछ काम है — लड़ाई छोड़ दो, मन का सदुपयोग करो, सात्विक तरीके से जीवन जी के सत्कर्म करके आगे बढ़ो।

प्रश्न: गुरु जी, विकारों पर थोड़ा और बताइए — काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह किस तरीके से काम करते हैं? (P26-0180)

काम — कोई भी काम करके हम अपने तरीके से परिणाम चाहते हैं, तब हमें तकलीफ होती है; तो काम करो, परिणाम आने दो, इंतजार करो। क्रोध हमें कब आता है? जब हमारे तरीके से सामने वाला कार्य नहीं करता। तो सामने वाले की स्थिति-परिस्थिति जांच लो — हो सकता है वो लंगड़ा हो और आप उसे पूरे पैरों वाले की तरह सोच के डांटने लगे। जांचो कि क्यों नहीं हुआ; जानबूझ के देर किया तो काम दूसरे को दे दो, गलती हो गई तो क्षमा करो, मौका दो — क्रोध नहीं आएगा, क्योंकि आपकी ऊर्जा जांचने में लग गई। मद मतलब अहंकार — रूप का, टैलेंट का, वैभव का। रूप आज नहीं तो कल ढल जाएगा, मिट्टी में मिल जाएगा — उसका क्या अहंकार करना? उसका अच्छे से उपयोग करो, किसी को गिराओ मत। शरीर की ताकत से लोगों को सताने के बजाय लोगों की सुरक्षा में लगा दो, वैभव को सत्कर्म में लगा दो — तब अहंकार नहीं आएगा, क्योंकि आपने उसका सदुपयोग कर दिया। लोभ तब होता है जब आप अपने से ज्यादा किसी अगल-बगल वाले को देखते हो — काश मेरे पास भी होता। देखिए आपको इसकी आवश्यकता है क्या, और आप इस लायक हो क्या — यह जांच लो तो लोभ नहीं आएगा। मोह तब होता है जब किसी से हमारे तरीके से कुछ मिलता है; मोह से बंधन, बंधन से आसक्ति हो जाती है, हम उसे छोड़ नहीं पाते। तो लेने का भाव छोड़ दो, देने का भाव अपना लो — तो काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आप पर काम नहीं करेंगे।

प्रश्न: गुरु जी, मोह और प्रेम में क्या अंतर है? (P26-0181)

मोह हमें उससे होता है जिससे हमें कुछ मिलता है — भौतिक जगत की वस्तु। प्रेम "कुछ नहीं चाहिए" में घटित होता है; जहां कुछ भी नहीं चाहिए, वहां प्रेम घटित होता है। कुछ चाहिए में वासना है। और जहां प्रेम घटित होता है, वहां आनंद — जैसे पहले कली होगी, फिर फूल खिलेगा; पहले प्रेम घटित होगा, बाद में आनंद।

प्रश्न: गुरु जी, "किसी विचार से राग और द्वेष मत रखो" — यह कहने का मतलब क्या है? (P26-0182)

राग-द्वेष से आप तभी मुक्त हो पाएंगे जब आप अपने तरीके का त्याग करेंगे — तो ना राग बनेगा, ना द्वेष बनेगा। जब योग्यता से ज्यादा नहीं चाहिए, तो राग-द्वेष नहीं बनेगा, बस बात खत्म। और जब तक चाहिए, रोक भी नहीं पाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, क्या सिद्ध पुरुष की दरगाह पर जाना चाहिए? (P26-0183)

मैं तो बोल रहा हूँ — आत्म दर्शन करो। कितना दर्शन करोगे?

प्रश्न: गुरु जी, जगत में हम हैं या हम ही में जगत है? मन, शरीर, बुद्धि, इंद्रियां, विषय के माध्यम से जगत बन बैठा है। जैसे स्वप्न में हम खाते-पीते, डरते, बातचीत करते हैं और नींद खुलती है — हो सकता है हम भी कहीं सो रहे हों? (P26-0184)

स्वप्न से जब तक नहीं जागेंगे, तब तक तो स्वप्न सच ही है — तब तक सच ही लगता है। जब जागेंगे, तब पता चलेगा कि सच था कि झूठ। अभी तो जो हम कर रहे हैं, ये सच है। अभी हम ना सच में हैं ना झूठ में — दोनों में फंसे हुए हैं। सत तक पहुंच जाओ, पता चल जाएगा कि सत्य क्या है, झूठ क्या है।

प्रश्न: गुरु जी, हम जब सो जाते हैं तब भी साउंड बजता है, तब क्यों नहीं सुनाई देता? (P26-0185)

आप तो सो गए ना — सो गए तो पता क्या चलेगा। ये शरीर की व्यवस्था है शरीर को आराम देने की। जैसे चाबी घुमा दो, बंद हो गया; बटन दबा दो, लाइट बंद — सिस्टम ही बंद कर दिया। इंजन खूब गर्म हो जाता है तो चाबी घुमा देते हो, इंजन ठंडा होने लगता है; तब उसे कुछ एहसास थोड़ी ना होगा। ऐसे निद्रा एक आराम है, और उससे शरीर को ऊर्जा मिलती है।

प्रश्न: गुरु जी, सिद्ध पुरुष, साधु-संत दो घंटा सोते हैं और 18-20 घंटे काम कर लेते हैं — दो घंटे में वो इतनी ऊर्जा कैसे पा लेते हैं जो आम इंसान 10 घंटे में भी नहीं पाता? (P26-0186)

आप अपने लिए जी रहे हो, वो लोगों के लिए जीते हैं। जब आप अपने लिए जीते हो तो आपकी ऊर्जा का एक दायरा है; और जब आप समाज के लिए जीते हो, तो आपको खूब ऊर्जा मिलती है। जैसे संविधान में जो कुर्सी पर है, वो कहीं भी जाए, उसके साथ पूरी व्यवस्था रहेगी; साधारण आदमी को वो व्यवस्था नहीं मिलेगी। वैसे ही जो व्यक्ति समाज के लिए जीने लगा, उसका दायरा छूट गया — उसको खूब ऊर्जा आती है। आप अभी दायरे में हो, इसलिए आपको खूब सोना पड़ता है। समाज के लिए जब करते हो तो जितने लोगों का आपके द्वारा कल्याण होगा, उतना आशीर्वाद भी मिलेगा, आपकी ऊर्जा बढ़ेगी; और श्राप मिलेगा तो ऊर्जा घटेगी, धीरे-धीरे दरिद्र हो जाओगे।

प्रश्न: गुरु जी, चेतन एवं अचेतन मन के बारे में बताइए। (P26-0187)

चेतन मन वो जो वर्तमान में काम करता है — शब्द, दृश्य, गंध, रस, स्पर्श, पांच इंद्रियों द्वारा। अचेतन मन — जो हमने जमा किया है, संचित किया है, वहां जाकर उसे खोलने लगता है।

प्रश्न: गुरुदेव, संसार में ईमानदारी और सच्चाई से चलने वाले असफल होकर सबसे पीछे रह जाते हैं, जबकि झूठ बोलने वालों को सब कुछ मिल जाता है — ऐसा क्यों?

(P26-0188)

तो देख लो — आपको सब कुछ चाहिए तो झूठ बोलो, और आपको कुछ नहीं चाहिए तो सच्चाई में जियो। निर्णय आपके हाथ में है। मुझे तो ऐसा लगता है कि सबसे अच्छा जीवन ईमानदारी का है। जमीन से उठकर डाइनिंग टेबल तक पहुंचने के लिए इतने लोगों का शोषण करने की क्या जरूरत है? आराम से जियो। और ऐसा नहीं है कि हर करोड़पति बेईमान ही है — ईमानदारी से भी लोग करोड़पति हैं; बहुत ऐसे उद्योगपति हैं जिन्होंने ईमानदारी से जीवन जिया है।

प्रश्न: गुरु जी, प्रारब्ध कर्म का मानव जीवन में क्या महत्व है? (P26-0189)

प्रारब्ध से मिलता है आपको। प्रारब्ध मतलब — जो आप कर रहे हो, वही आगे मिलेगा; वही प्रारब्ध कहलाता है, भाग्य कहलाता है, किस्मत कहलाता है — कुछ भी कह लो।

प्रश्न: गुरु जी, विपश्यना क्या होती है? (P26-0190)

विपश्यना मैंने भी किया था, लेकिन मुझे ऐसा कुछ लगा नहीं — साधना की खोज में हमने भी बहुत साधनाएं कीं। विपश्यना में सांस पर देखते हो, फिर संवेदनाओं को — एक-एक अंग में देखो क्या संवेदना हो रही है, खुजलाना नहीं, बस देखते रहो, ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर; फिर सबको माफ कर दो — हमने जो गलती की उसकी माफी मांगो, और जिसके प्रति द्वेष है उसे भी माफ कर दो। लेकिन हम तो माफ कर रहे हैं, वो नहीं कर रहा — दोनों तरफ से माफी नहीं होगी; तो ऐसा कर्म करो कि वो माफ करे। हमने तो बस सीधा-सादा ईमानदारी, सत्कर्म — मूल पकड़ लिया, और यात्रा हो ही रही है।

प्रश्न: गुरु जी, ज्ञाता-दृष्टा कहां तक रहना है? (P26-0191)

दृष्टा हो गए, तो जगत से छूट गए।

प्रश्न: गुरु जी, मन का आत्मा से क्या संबंध है? (P26-0192)

मन का संबंध शरीर से है। जैसे एरो (कर्सर) का संबंध कंप्यूटर और मोबाइल से है, सिम कार्ड से नहीं — सिम कार्ड निकाल दो तो भी दबाओ तो एरो आ जाता है। ऐसे ही आत्मा का मन से कोई मतलब नहीं; मन शरीर की आवश्यकता के लिए है, शरीर का सिस्टम है। मन ही एक है जो हर जगह जाता है — जैसे बिना एरो के मोबाइल में कोई फाइल नहीं खुलेगी; दसों इंद्रियों से, कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों दोनों से, मन का पूरा कनेक्शन है, क्योंकि वह शरीर से ही पूरा काम करता है।